

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना

कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि २०८२

आ.व.२०८२/०८३



नेपाल सरकार  
राष्ट्रपति चुरे-तराई मधेश संरक्षण विकास समिति  
खुमलटार, ललितपुर



समितिको १५४ औं बैठक (२०८२/०५/०३) बाट स्वीकृत

*[Handwritten signature]*

*[Handwritten signature]*  
२०८२/०५/०३

*[Handwritten signature]*

*[Handwritten signature]*

विषय सूची

|  |    |
|--|----|
| पृष्ठभूमी.....   | १  |
| परिच्छेद-१.....  | २  |
| प्रारम्भिक.....  | २  |
| १.१. संक्षिप्त नाम र प्रारम्भ .....  | २  |
| १.२. परिभाषा .....   | २  |
| १.३. कार्यविधिको उद्देश्य .....  | ३  |
| परिच्छेद-२.....  | ३  |
| कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि साझा प्रक्रिया तथा मार्गदर्शन.....  | ३  |
| २.१. साझा प्रक्रिया तथा मार्ग निर्देशन .....   | ३  |
| २.२. उपभोक्ता समिति गठन तथा रकम भुक्तानी प्रक्रिया .....   | ६  |
| २.३. कार्यक्रम अनुगमन.....   | ६  |
| २.४. प्रगति प्रतिवेदन.....   | ७  |
| परिच्छेद-३ .....   | ७  |
| सार्वजनिक निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम कार्यान्वयन .....   | ७  |
| ३.१. गल्ली, पहिरो/खहरे रोकथाम / नियन्त्रण .....  | ७  |
| ३.२. नदी/खोला किनारा तटबन्ध / स्थिरिकरण / नियन्त्रण / व्यवस्थापन<br>( स्पर / डाइक / वायोइन्जिनियरिङ ) .....  | ८  |
| ३.३. हरित पेटि निर्माण .....   | ९  |
| ३.४. भूमिगत जल पुनर्भरण र सतह मुनिको पानी उपयोग ( चुरे तथा भावर क्षेत्रमा) .....   | ११ |
| ३.५. भिरालो जग्गामा बहुवर्षीय ( फलफूल ) खेती .....   | १२ |
| ३.६. ताल तलैया/संरक्षण पोखरी / रिचार्ज पोखरी निर्माण, संरक्षण तथा व्यवस्थापन / सौन्दर्यकरण<br>/ जिर्णोद्धार .....                                  | १२ |
| ३.७. बाँस/ घाँस/अम्रिसो तथा अन्य विरुवा रोपण तथा व्यवस्थापन .....  | १३ |
| ३.८. तारवार सहित वृक्षरोपण .....   | १३ |
| ३.९. नदी उकास जग्गामा तारवार सहितको वृक्षरोपण .....  | १४ |
| ३.१०. जैविक प्रविधि मार्फत सडक पाखो संरक्षण .....  | १४ |
| ३.११. पर्यापर्यटन प्रवर्धन .....   | १६ |
| ३.१२. जैविक वातावरणीय एवम् भू-स्खलनको हिसावले अति संवेदनशील रहेका वन क्षेत्र (Hot Spot) को तारवार<br>सहित पुनरोत्पादन संरक्षण तथा व्यवस्थापन ..... | १७ |
| ३.१३. कृषि वन प्रवर्धन .....   | १७ |
| ३.१४. रेन वाटर/रन अफ हावैस्टिङ्ग डयाम .....  | १८ |
| ३.१५. सिंचाई कुलो निर्माण .....  | १९ |
| ३.१६. वन विरुवा उत्पादन / खरिद तथा वितरण .....   | १९ |
| ३.१७. नर्सरीमा विरुवा उत्पादनको लागि नर्सरी नाइकेको ज्याला .....   | २० |

*[Handwritten signature]*

*[Handwritten signature]*

*[Handwritten signature]*

*[Handwritten signature]*



राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

|   |    |
|---|----|
| ३.१८ बाँसको कलमी विरुवा उत्पादन / खरिद तथा वितरण .....  | २१ |
| ३.१९ क्षतिग्रस्त भूमि पुनरुत्थान .....  | २१ |
| ३.२० विगत वर्षमा संचालित कार्यहरूको संरक्षण तथा मर्मत सम्भार .....  | २२ |
| ३.२१ जनताको रहर हरीत शहर कार्यक्रम .....  | २३ |
| ३.२२ नर्सरी निर्माण तथा स्तरत्रोती व्यवस्थापन तथा फलफूल विरुवा खरिद तथा वितरण .....   | २३ |
| ३.२३ अग्नी नियन्त्रण सम्बन्धि सामग्री उपकरण तथा सामान (चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो नियन्त्रणका लागी प्रयोग हुने Fire Ambulance) (For fire suppression) .....                     | २५ |
| ३.२४ अग्नी नियन्त्रण सम्बन्धि सामग्री उपकरण तथा सामान (PPE Set, FireJet, Fire swatter, Fire rake, Axe आदिको सेट) .....  | २५ |
| परिच्छेद-४ .....  | २६ |
| अध्ययन अनुसन्धान सम्बन्धी कार्यक्रम कार्यान्वयन .....   | २६ |
| ४.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया .....  | २६ |
| ४.२ विशेषज्ञ नियुक्ती .....   | २७ |
| परिच्छेद-५ .....  | २७ |
| प्रचार प्रसार सम्बन्धी कार्यक्रम कार्यान्वयन .....  | २७ |
| ५.१. प्रचार प्रसार सम्बन्धी कार्यक्रम .....   | २७ |
| ५.२ चुरे संरक्षण सम्बन्धि बुलेटिन प्रकाशन (अर्धवार्षिक) .....   | २८ |
| ५.३ वार्षिक क्यालेण्डर प्रकाशन तथा वितरण .....  | २९ |
| ५.४ प्रेस क्लिपिंग संकलन तथा प्रकाशन .....  | २९ |
| ५.५ चुरे संरक्षण सम्बन्धी श्रव्य दृश्य सामग्री तयारी तथा प्रसारणस .....   | २९ |
| ५.६. चुरे संरक्षण सम्बन्धी जिंगल प्रसारण (स्थानिय एफ.एम. वाट) .....   | ३० |
| ५.७ चुरे संरक्षण सम्बन्धी टेलिभिजन बहस तथा प्रसारण .....  | ३० |
| ५.८ चुरे संरक्षण सम्बन्धी ब्रोसर, पर्चा, पम्पलेट, पोस्टर, स्टिकर तयारी तथा वितरण .....  | ३० |
| ५.९ चुरे डायरी उत्पादन तथा वितरण .....  | ३१ |
| ५.१० चुरे संरक्षण सम्बन्धित सन्देशमूलक सामग्री प्रकाशन (विभिन्न पत्रपत्रिकामा) .....  | ३१ |
| ५.११ चुरे संरक्षण सम्बन्धि क्रियाकलापहरूको फोटो फ्रेम तयारी तथा वितरण.....  | ३१ |
| ५.१२ चुरे सम्बन्धी वक्तृत्वकला र पुरस्कार .....   | ३२ |
| ५.१३ पम्पलेट, पोस्टर, ब्रोशियर, वार्षिक प्रगति पुस्तिका, Activities Profile प्रकाशन, ब्याग खरिद, चुरेको लोगो अंकित ब्याच / कोट पिन, प्रचारप्रसार सामग्री उत्पादन तथा प्रकाशन, वितरण ..... | ३२ |
| ५.१४ रेडियो मार्फत प्रचार प्रसार .....  | ३३ |
| ५.१५ होर्डिङ्ग बोर्ड निर्माण .....  | ३३ |
| परिच्छेद-६ .....  | ३३ |
| तालिम, गोष्ठी, भ्रमण तथा बैठक सम्बन्धी कार्यक्रम .....  | ३३ |
| ६.१ तालिम, गोष्ठी, भ्रमण तथा बैठक सम्बन्धी कार्यक्रम .....  | ३३ |
| ६.२ केन्द्र स्तरीय समन्वय बैठक .....  | ३६ |

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

|  |    |
|--|----|
| ६.३ प्रदेशस्तरीय समन्वय समितिका बैठक .....   | ३७ |
| ६.४ क्लस्टर स्तरीय समन्वय, प्रगती समिक्षा गोष्ठी .....                                     | ३८ |
| ६.५ केन्द्र स्तरीय प्रगति समिक्षा गोष्ठी .....   | ३८ |
| ६.६ वार्षिक योजना तर्जुमा गोष्ठी .....   | ३९ |
| परिच्छेद-७ .....   | ३९ |
| अन्य कार्यक्रमहरू .....  | ३९ |
| ७.१ चुरे दिवस केन्द्र स्तर/इकाई स्तर .....   | ३९ |
| ७.२ चुरे संरक्षण तथा व्यवस्थापनसंग सम्बन्धित सोधपत्रको निमित्त सहयोग .....                 | ३९ |
| ७.३ वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन तयारी तथा प्रकाशन .....                                       | ४० |
| ७.४ नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तयारी तथा प्रकाशन .....                  | ४० |
| ७.५ विगतका कार्यक्रमहरूको अभिलेखीकरण/प्रभाव मुल्यांकन .....                                | ४१ |
| ७.६ नदी प्रणालीहरूको एटलस तयारी .....  | ४२ |
| ७.७ नदी प्रणालीहरूको पुनरावलोकन (नक्शांकन तथा प्रकाशन) .....                               | ४२ |
| ७.८ नदी प्रणाली स्तरीय एकीकृत स्रोत व्यवस्थापन (पन्च वर्षीय) योजना तर्जुमा कार्यक्रम ..... | ४२ |
| ७.९ चुरे संरक्षणका मापदण्ड कार्यविधि सम्बन्धी अभिलेखीकरण कार्यक्रम .....                   | ४३ |
| ७.१० बातावरणीय अध्ययनको लागि प्रस्तावित क्षेत्र/आयोजनाको अनुगमन .....                      | ४४ |
| ७.११ विभिन्न विषयका अध्ययन अनुसन्धानका लागि कार्यक्षेत्रगत शर्त (TOR) तयारी .....          | ४५ |
| परिच्छेद-८ .....   | ४६ |
| विविध .....  | ४६ |
| अनुसूची १ .....  | ४७ |
| कार्यक्रम कार्यान्वयन सम्झौता .....  | ४७ |
| अनुसूची - २ .....  | ५० |
| होर्डिंग बोर्डको नमुना .....   | ५० |
| अनुसूची - ३ .....  | ५२ |
| उपभोक्ता समिति गठन तथा संचालन सम्बन्धी व्यवस्था .....                                      | ५२ |
| अनुसूची - ४ .....  | ५५ |
| सार्वजनिक सुनुवाई फारम .....   | ५५ |
| अनुसूची ५ .....  | ५७ |
| मासिक प्रगति विवरण फारम .....  | ५७ |
| अनुसूची ६ .....  | ५८ |
| त्रैमासिक तथा वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन फारमहरू .....                                       | ५८ |
| अनुसूची ७ .....  | ६० |
| पार्श्वचित्र .....   | ६० |



## पृष्ठभूमि

राष्ट्रपति चुरे-तराई मधेश संरक्षण विकास समितिको गठन २०७१ आषाढ २ मा भएको हो । गठन भएको वर्ष देखिनै यस समितिले कार्यक्रमहरू कार्यान्वयनको लागि विभिन्न साझेदार निकायहरू जस्तै- साविक वन विभाग, तथा जलाधार संरक्षण विभाग, वनस्पति विभाग र वन अनुसन्धान तथा सर्वेक्षण विभाग अन्तर्गतका जिल्ला वन कार्यालय, जिल्ला भू-संरक्षण कार्यालय, जिल्ला कृषि विकास कार्यालय, जिल्ला पशु सेवा कार्यालय, जिल्ला वनस्पति कार्यालय, राष्ट्रिय निकुन्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण विभाग, जल उतपन्न प्रकोप नियन्त्रण डिभिजन कार्यालयहरू र नेपाली सेना मार्फत् कार्यक्रमहरू संचालन भएको थियो । आ.व. २०७५/७६ मा ७ वटै प्रदेश समेटिने गरी ९३ स्थानीय तहहरू मार्फत् कार्यक्रमहरू संचालन भएको थियो । संचालनमा आएका कार्यक्रमहरूको समय समयमा गरिने कार्यहरूको नियमित अनुगमन तथा निरीक्षण समिति केन्द्रस्तर, कार्यक्रमको कार्यान्वयनको अख्तियारी पाएका सम्बन्धित विभागहरू र सम्बन्धित साविकका क्षेत्रीय निर्देशनालयहरूबाट हुदै आएका थिए । आ.व. २०७६/७७ देखि समिति मातहत रहने गरी देशका पाँच स्थानहरूमा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरू स्थापना भई राष्ट्रपति चुरे संरक्षण कार्यक्रम कार्यान्वयन भईरहेको छ । क्षतीग्रस्त भूमि पुनरुत्थान र तालतलैया संरक्षण तथा व्यवस्थापनका केहि कार्यक्रमहरू नेपाली सेनाको वन तथा पर्यावरण सुरक्षा निर्देशनालय मार्फत समेत कार्यान्वयन भईरहेको छ । कमलो चुरे पहाडको भू-स्खलन तथा क्षयीकरण, जलाधार क्षेत्रको विनाश, वनको परिमाणात्मक तथा गुणात्मक हास, पहाडी भिरपाखाहरूमा अत्याधिक मानवीय गतिविधि आदि कारणहरूले गर्दा चुरे, भावर, तराई-मधेश क्षेत्रका मानिसहरूको वसोवास, खेतीपाती, जनजीविका र समग्र पारिस्थितिकीय प्रणालीमा पर्न गएको नकारात्मक प्रभाव न्यूनीकरण गर्नु नै राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास कार्यक्रमको मुल उद्देश्य रहेको छ ।

नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषदको मिति २०७४ जेष्ठ ४ को निर्णयबाट चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापनको लागि तयार भएको २० वर्षे "चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना, २०७४" स्वीकृत भई कार्यान्वयनको चरणमा रहेको छ । गुरुयोजनाले निर्दिष्ट गरेको कार्यक्रमहरू, नेपाल सरकारको नीति तथा कार्यक्रम र बजेट वक्तव्यमा समेटिएका विषयहरूलाई आधार मानी तयार गरिएका सालवसाली कार्यक्रमहरूलाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्नको लागि प्रक्रियागत सरलीकरण गर्न र अपेक्षित नतिजा हासिल गर्न कार्यान्वयन निकायहरूबाट गरिने कामहरूको प्रभावकारिताको लागि अर्थ मन्त्रालयको प.सं. २०८२/८३ मार्गदर्शन च.नं. ०१ मिति २०८२/०४/०१ आर्थिक वर्ष २०८२/८३ को बजेट कार्यान्वयन सम्बन्धी मार्गदर्शनको नं. २६, राष्ट्रपति चुरे- तराई मधेश संरक्षण विकास समिति गठन आदेश, २०७१ को दफा २० र वन तथा वातावरण मन्त्रालयबाट जारी भएको राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिको आर्थिक

१

कार्यविधि नियमावली २०७१ को नियम ७३ समेतको अधीनमा रही राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिबाट यो कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि तयार गरी लागु गरिएको छ ।

### परिच्छेद-१ प्रारम्भिक

#### १.१. संक्षिप्त नाम र प्रारम्भ

- क) यस कार्यविधिको नाम “राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३” रहेको छ ।  
ख) यो कार्यविधि समितिबाट स्वीकृत भएको मिति देखि लागु हुनेछ ।

#### १.२. परिभाषा

विषय वा प्रसङ्गले अर्को अर्थ नलागेमा यस कार्यविधिमा:-

- क) “उपभोक्ता समिति” भन्नाले निर्माण कार्यबाट प्रत्यक्ष लाभ पाउने व्यक्तिहरूले कुनै निर्माण कार्यको निर्माण, सञ्चालन, मर्मत सम्भार गर्नको लागि आफुहरू मध्येबाट गठन गरेको समिति सम्झनु पर्दछ । यसले प्रचलित कानून वमोजिम सरकारी निकायमा दर्ता भएका मौजुदा उपभोक्ता समितिहरू समेतलाई जनाउँदछ ।  
ख) “उपभोक्ता समूह” भन्नाले कार्यक्रम संचालनको लागि गठन भएका समूह एवम् मौजुदा कृषक समूह, सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, कबुलियती वन उपभोक्ता समूह, महिला समूह, खानेपानी उपभोक्ता समूह, सिंचाई उपभोक्ता समूह, स्थानीय टोल विकास संस्था जस्ता प्रचलित कानून वमोजिम गठन भई क्रियासिल रहेका समूह समेतलाई बुझाउँछ ।  
ग) “कार्यक्रम” भन्नाले राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना सम्झनु पर्दछ ।  
घ) “कार्यान्वयन निकाय” भन्नाले समितिको स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने सचिवालय, ५ वटा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरू र नेपाली सेना तर्फको वन तथा पर्यावरण सुरक्षा निर्देशनालय समेतलाई सम्झनु पर्दछ ।  
ङ) “मन्त्रालय” भन्नाले नेपाल सरकार वन तथा वातावरण मन्त्रालय सम्झनु पर्दछ ।  
च) “सचिवालय” भन्नाले राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिको सचिवालय सम्झनु पर्दछ ।  
छ) “समिति” भन्नाले राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समिति सम्झनु पर्दछ ।  
ज) “स्थानीय तह” भन्नाले महानगरपालिका, उपमहानगरपालिका, नगरपालिका, गाउँपालिका र तिनका वडाहरूलाई समेत जनाउनेछ ।

२



### १.३. कार्यविधिको उद्देश्य

- (क) चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना, २०७४ ले अङ्गीकार गरेको लक्ष्य हासिल गर्न निर्धारण गरिएका उद्देश्यहरूले अपेक्षा गरेका उपलब्धीहरू पुरा हुने गरी स्वीकृत कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने/गराउने।
- (ख) राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना अन्तर्गतका क्रियाकलापहरू सञ्चालनका लागि प्रक्रियागत मार्ग निर्देशन गर्ने।
- (ग) कार्यक्रम कार्यान्वयन निकायहरूबाट सम्पन्न गरिने कार्यक्रमहरू र कार्यक्रम सञ्चालन प्रक्रियामा एकरूपता ल्याउने।
- (घ) कार्यक्रम समयमै सम्पन्न गर्न, कार्यक्रमको गुणस्तर कायम गर्न र कार्यक्रमको दीगोपन कायम गर्न मार्ग निर्देशन गर्ने।

### परिच्छेद-२

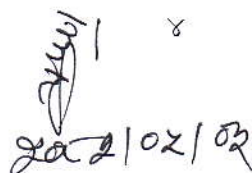
#### कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि साझा प्रक्रिया तथा मार्गदर्शन

### २.१. साझा प्रक्रिया तथा मार्ग निर्देशन

- २.१.१ कार्यक्रम संचालन गर्दा आर्थिक कार्यविधि तथा वित्तीय उत्तरदायित्व ऐन, २०७६, आर्थिक कार्यविधि तथा वित्तीय उत्तरदायित्व नियमावली, २०७७, सार्वजनिक खरिद ऐन, २०६३, सार्वजनिक खरिद नियमावली, २०६४, वातावरण संरक्षण ऐन, २०७६, वातावरण संरक्षण नियमावली, २०७७, वन ऐन, २०७६, वन नियमावली, २०७९, लगायत अन्य प्रचलित कानूनहरूको प्रावधानहरू बमोजिम गर्नुपर्ने छ।
- २.१.२ स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रममा तोकिएको परिमाण र विनियोजित बजेटको परिधि भित्र रही कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ। इकाईले कार्यक्रम सञ्चालनका लागि स्थान छनौट लगायत सञ्चालन प्रकृया वारे समितिका सम्बन्धित सदस्यसंग छलफल र समन्वयबाट गर्नुपर्ने छ। स्वीकृत कार्यक्रमको स्थान परिवर्तन वा संसोधनका लागि वन तथा वातावरण मन्त्रालयमा अनुरोध गरी पठाउनु पर्ने भएमा समितिबाट निर्णय भए अनुसार गर्नुपर्ने छ।
- २.१.३ कामको प्रकृति अनुसार कार्यक्रम सञ्चालनका क्रममा सम्बन्धित संघीय सरकार, प्रदेश सरकार, स्थानीय तह तथा जिल्ला स्थित सरोकारवाला निकायहरूसंग आवश्यकता अनुसार समन्वय गर्नुपर्ने छ।

- २.१.४ स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रम वा गुरु योजना वा नदी प्रणाली स्तरीय एकीकृत योजनामा तोकिएका विवरणहरू स्थान छनौटका लागि प्रमुख आधार हुनेछन्। यसका लागि आवश्यकता अनुसार समितिका सदस्य, कार्यान्वयन निकायका प्राविधिक, सम्बन्धित लाभग्राही समूह तथा स्थानीय तहका प्रतिनिधि समेतको सहभागितामा स्थलगत अवलोकन गरी कार्यक्रम स्थान छनौट गर्नु पर्नेछ ।
- २.१.५ नदी प्रणालीमा कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा नदी प्रणाली एकीकृत श्रोत व्यवस्थापन योजना अनुसार संचालन गर्नुपर्ने छ। योजना तयार नभएका नदीप्रणालीको हकमा चुरे संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना, २०७४ को खण्ड २ र संरक्षणको आवश्यकता तथा मागको आधारमा प्राथमिकीकरण गरी कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्नेछ।
- २.१.६ क) कार्यक्रम सभै, डिजाईन र लागत अनुमान तयार भएपछि कामको प्रकृति र स्वीकृत बजेटको परिमाण हेरी आवश्यकता अनुसार सार्वजनिक खरिद नियमावली, २०६४ बमोजिम आपूर्तिकर्ता, निर्माण व्यवसायी, परामर्शदाता, सेवाप्रदायक, सम्बन्धित स्थानिय तह/वडा कार्यालयको समन्वयमा लाभग्राही समूहबाट गठन भएको उपभोक्ता समिति वा प्रचलित कानून बमोजिम गठन भई सम्बन्धित स्थानमा क्रियाशिल रहेका उपभोक्ता समूह/समितिहरू वा अमानतबाट कार्य संचालन गर्न गराउन सकिनेछ ।
- ख) यसरी कार्यक्रम संचालन गर्दा २० लाख वा सो भन्दा माथीका योजनाहरू कार्यान्वयन गर्दा ठेक्का मार्फत गर्नुपर्ने छ। यसरी ठेक्का गर्दा समान प्रकृतिका योजनाहरूलाई प्याकेजिङ्ग गरी गर्न सकिने छ।
- ग) उपभोक्ता समिति मार्फत कार्यक्रम संचालन गर्दा सम्बन्धित उपभोक्ता समितिले कम्तिमा १० प्रतिशत लागत साझेदारी वा जनश्रमदान उपलब्ध गराउनु पर्नेछ ।
- घ) कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा सम्बन्धित पालिका/वडा कार्यालयका प्राविधिकहरूको सहयोग लिन सकिनेछ ।
- २.१.७ कार्यक्रमहरूको लागत अनुमान तयार गर्दा नेपाल सरकारले स्वीकृत गरेको नर्मस, सम्बन्धित जिल्ला वा सम्बन्धित स्थानीय तहको चालु आ.व. का लागि स्वीकृत दररेट तथा सार्वजनिक खरिद ऐन, २०६३, सार्वजनिक खरिद नियमावली, २०६४ समेतको आधारमा गर्नुपर्नेछ ।
- २.१.८ कार्यान्वयन निकायले कार्यक्रम कार्यान्वयन योजना तथा खरिद योजना तयारी गर्ने कार्य समितिका सम्बन्धित सदस्यसंगको समन्वयमा गर्नेछ। महिनाको एकपटक स्टाफ मिटिङ्ग राखी कार्य प्रगतिको अवस्था, कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देखा परेका समस्याहरू र समाधानका उपायहरूको बारेमा छलफल गरिनेछ।



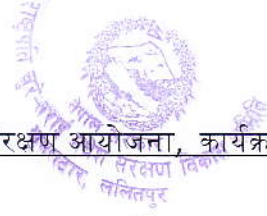
  
२०२/०२/०३





- २.१.९ भू-संरक्षण वा नदी नियन्त्रण गर्ने कार्यमा नेपाल सरकारबाट प्रमाणित गुणस्तरको हेभिकोटेड जि.आई. तारको मेशिनद्वारा तयार गरिएको तारजाली प्रयोग गर्नु पर्नेछ। उपभोक्ता समितिबाट गरिने काममा हेभी मेशिन प्रयोग गर्नुपर्ने जटिल प्रकृतिको कार्य भएमा लागत अनुमान तयार गर्दाको समयमा नै सो कुरा उल्लेख गरी संचालन गर्न सकिनेछ।
- २.१.१० कार्यक्रम संचालन तथा कार्यान्वयन गर्नका लागि आवश्यकता अनुसार समिति र कार्यक्रम कार्यान्वयन निकायका कर्मचारीहरू परिचालित हुनेछन्। स्वीकृत दरबन्दी बमोजिम कर्मचारी पूर्ति नभएमा र कार्य प्रकृति अनुसार थप जनशक्ति आवश्यक भएमा प्रचलित ऐन नियम बमोजिम कर्मचारी व्यवस्थापन गरी काममा लगाउन सकिने छ। कामको प्रकृति हेरी संघ तथा प्रदेश स्तरका विषयगत कार्यालयहरू तथा स्थानीय तहमा उपलब्ध प्राविधिक कर्मचारीहरूबाट समेत सहयोग लिन सकिनेछ।
- २.१.११ कार्यक्रम संचालन गर्दा गरीब, विपन्न तथा सिमान्तकृत समुदाय (नदी किनारमा बसोबास गर्ने थारु, माझी, वनकरीया, मुसहर, पासवान, राउटे, चेपांग, कुमाल लगायत पिछडिएका जातीहरू) र महिलाको जीवनमा प्रत्यक्ष सकारात्मक प्रभाव पार्न सक्ने तर्फ केन्द्रीत हुनु पर्नेछ। वन तथा सार्वजनिक जमिन अतिक्रमणका लागि सहयोग हुने गरी कुनै पनि कार्यक्रम संचालन गरिने छैन।
- २.१.१२ कार्यक्रम प्रारम्भ गर्नु अघि कार्यालयले निर्माण व्यवसायी/सेवा प्रदायक/उपभोक्ता समितिलाई कार्यक्रमको बारेमा जानकारी गराउनु पर्नेछ। यसरी जानकारी गराउँदा लागत अनुमान तथा डिजाइन सम्बन्धमा अभिमुखीकरण समेत गर्न सकिनेछ। कार्यक्रम शुरु हुनु अगावै निर्माण व्यवसायी/सेवा प्रदायक/उपभोक्ता समितिलाई कार्यदिश, सम्झौता पत्र आदि कागजात उपलब्ध गराउनु पर्नेछ।
- २.१.१३ उपभोक्ता समितिले सम्झौता (अनुसुची १ अनुसार) गरे बमोजिमको योजना आफैले सम्पन्न गर्नुपर्नेछ। योजनाको स्याहार, सम्भार र मर्मत गर्ने दायित्व उपभोक्ता समितिको हुनेछ।
- २.१.१४ कार्यक्रम शुरु गर्नु भन्दा पहिले कार्यक्रम संचालन स्थलमा लागत अनुमान लगायत आयोजनासंग सम्बन्धित अन्य अत्यावश्यक र महत्वपूर्ण जानकारी तथा विवरणहरू खुल्ने गरी अनुसुची २ अनुसारको होर्डिङ बोर्ड राख्नु पर्नेछ। होर्डिङ बोर्डको साइज कम्तिमा ५x४ फिटको पर्नेछ।
- २.१.१५ कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा गराउँदा कामको परिमाण र गुणस्तरमा कुनै कमी कमजोरी वा लापरवाही नहुने गरी कार्यान्वयन गर्ने व्यवस्था मिलाउनु पर्दछ।

५



- २.१.१६ यस कार्यविधिमा उल्लेख नभएका क्रियाकलापहरू प्रचलित ऐन, नियम, नर्मस, निर्देशिका तथा कार्यविधिको परिधि भित्र रही कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ ।
- २.१.१७ कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्नु अगावै कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्न सकिने नसकिने अवस्था एकीन गरी कार्यक्रम संशोधन गर्नुपर्ने अवस्था देखिएमा समितिका सदस्यको समन्वयमा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरूले आ.व.को दोश्रो त्रैमासिक अवधि भित्रै कार्यक्रम संशोधनको लागि समितिमा टिप्पणी सहित पेश गर्नुपर्नेछ ।
- २.१.१८ कार्यक्रम सम्पन्न भई रकम भुक्तानी भए पश्चात उक्त योजना सम्बन्धित उपभोक्ता समिति/स्थानीय निकाय/सरोकारवालालाई हस्तान्तरण गर्नु पर्नेछ ।

## २.२. उपभोक्ता समिति गठन तथा रकम भुक्तानी प्रक्रिया

- (क) सम्बन्धित स्थानिय तह / वडा कार्यालयले लाभग्राही समूहबाट उपभोक्ता समिति गठन गर्दा सम्भव भएसम्म समितिको कर्मचारी ( site incharge), वडा अध्यक्ष, वडा सदस्य (प्रतिनिधि), स्थानीय संघ सस्थाका प्रतिनिधि तथा लाभग्राही जनताको सहभागिता गराउनु पर्नेछ। उपभोक्ता समिति गठन र त्यसको जिम्मेवारी अनुसूची ३ बमोजिम हुनेछ । योजनाको प्रकृति र आवश्यकता अनुरूप उपभोक्ता समिति मातहत अन्य उपसमितिहरू पनि गठन गर्न सकिनेछ ।
- (ख) कार्य सम्पन्न भए पश्चात् अनुसूची ४ को ढाँचामा सार्वजनिक सुनुवाइको प्रतिवेदन, उपभोक्ता समितिको निर्णयको प्रतिलिपि, बिल, भरपाई, कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन, सम्भव भएसम्म सम्बन्धित वडा कार्यालयको सिफारिस र अन्य सम्बन्धित कागजात समेत समावेश गरी कार्यालयमा रकम भुक्तानीको लागि निवेदन पेश गर्नुपर्नेछ ।
- (ग) उपभोक्ता समितिको माग भएमा सम्पन्न भएको कामको नापी कितावको आधारमा रनिङ्ग बिल अनुसारको रकम भुक्तानी गर्न सकिनेछ ।
- (घ) निवेदन प्राप्त भए पश्चात् तोकिएको प्राविधिकले स्थलगत निरीक्षण गरी प्राविधिक प्रतिवेदन सहित उपभोक्ता समितिले भुक्तानीको लागि पेश गरेका बिल भर्पाई लगायतका कागजातहरू जाँच गरी पेश गर्नु पर्नेछ। स्थलगत निरीक्षण कार्य सम्बन्धित उपभोक्ता समिति लगायत अन्य सरोकारवालाको उपस्थितिमा गर्नुपर्नेछ ।

## २.३. कार्यक्रम अनुगमन

कार्यक्रमहरूको अनुगमन गर्दा तपसिलका बुँदामा ध्यान दिदै यस समितिको अनुगमन तथा मुल्यांकन निर्देशिका २०७८ बमोजिम गरिनेछ ।

- (क) सञ्चालित र सम्पन्न भएका कार्यक्रमहरूको सम्बन्धित स्थानीय तहका प्रतिनिधिहरू लगायत अन्य सरोकारवालाहरू समेतको उपस्थितिमा अनुगमन गर्न सकिनेछ ।

६

- (ख) आवश्यकता अनुसार समितिका सदस्य, ईकाई प्रमुख र प्राविधिक कर्मचारीहरूको संयुक्त अनुगमन टोली समेत बनाई कार्यक्रम अनुगमन गर्न सकिनेछ ।
- (ग) उपभोक्ता समितिले अनुगमन उपसमिति समेत गठन गर्न सक्नेछ । यस उपसमितिले आन्तरिक रूपमा अनुगमन गरी तोकिएको समयमा तोकिएको गुणस्तरको काम सम्पन्न गर्न सहयोग पुर्याउनेछ ।

#### २.४. प्रगति प्रतिवेदन

- (क) कार्यक्रम कार्यान्वयन निकायले कार्यक्रमको मासिक, त्रैमासिक र वार्षिक प्रतिवेदन अनुसूची ५ र ६ अनुसार तोकिएको ढाँचा र समयमा समितिमा पठाउनु पर्नेछ ।
- (ख) कार्यान्वयन निकायहरूबाट पेश भएका प्रगतिहरू संकलन (compile) गरी समिति तथा वन तथा वातावरण मन्त्रालयमा मासिक, त्रैमासिक र वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन पठाउनु पर्नेछ ।
- (ग) त्रैमासिक र वार्षिक प्रगति प्रतिवेदनहरू राष्ट्रिय योजना आयोगको निर्दिष्ट ढाँचा बमोजिम तयार गर्नु पर्दछ ।
- (घ) कार्यक्रम कार्यान्वयन निकायले सम्पादन गरेका हरेक कार्यक्रम तथा क्रियाकलापहरूको अनुसूची ७ अनुसारको पार्श्वचित्र (Activity Profile) बनाइ सो को सफ्टकपी समेत समितिको सचिवालयमा पेश गर्नु पर्नेछ ।
- (ङ) समितिको सचिवालयले सबै कार्यक्रम कार्यान्वयन निकायबाट वार्षिक प्रगति प्राप्त भए पछि प्रगतिहरूको संकलन (Compile) गरी वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन पुस्तिका प्रकाशन गर्नु पर्नेछ ।

#### परिच्छेद-३

#### सार्वजनिक निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम कार्यान्वयन

#### ३.१. गल्छी, पहिरो/खहरे रोकथाम/नियन्त्रण

चुरे क्षेत्रमा सतही, रिल ( धर्से), गल्छी तथा खहरे जस्ता भू-क्षयको अत्यधिक समस्या र साना, ठुला आकारका भू-स्खलनका समस्या पनि रहेको पाईन्छ । यस्ता समस्याहरूलाई सम्बोधन गर्न नै यो कार्यक्रम राखिएको हो । यस कार्यक्रम अन्तर्गत उपचारात्मक रूपमा प्याकेज छनौट गर्दा सरल, दीगो, कार्यान्वयन तथा मर्मत सम्भार गर्न सक्ने प्रकृतिको विधिहरू छनौट गरिनेछ । संरचना डिजाईन गर्दा वानस्पतिक संरचना तथा वायो-इन्जिनियरिङ्ग प्रविधिलाई समेत प्राथमिकता

७

दिइनेछ । यस कार्यक्रम अन्तर्गत निम्न उपचार विधि प्रयोग गर्न सकिन्छ ।

- (क) वानस्पतिक संरचनाहरू
- (ख) सुरक्षित पानी निकास
- (ग) कम खर्चिलो भू-संरक्षण प्रविधि
- (घ) ईन्जिनियरिङ्ग संरचना
- (ङ) घाँस रोपण, बाँस रोपण, संरक्षण, वृक्षरोपण, हाँगा रोपण आदि ।

३.१.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:




- (क) छनौट गरिएका नदी प्रणालीमा नदी प्रणाली व्यवस्थापन योजनाले तोकेका तथा प्राविधिक रूपमा आवश्यक देखिएका स्थानमा सोही योजनाले तोकेका प्रकृतिको कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। (ख) नदीप्रणाली एकीकृत स्रोत व्यवस्थापन योजना तथा गुरुयोजनाले तोकेको स्थानहरू पहिचान गरी कार्यक्रमको सम्भाव्यता अध्ययन गरी कार्यक्रमको औचित्यता र संरचनागत आवश्यकता एकीन गर्ने ।

३.१.२. ध्यान दिनुपर्ने विषयहरू:

- (क) सतही, रिल (धर्से), गल्छी तथा खहरे जस्ता भू-क्षय नियन्त्रण गर्ने र पहिरो नियन्त्रणका कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा वानस्पतिक उपचार / बायो-इन्जिनियरिङ्ग प्रविधिलाई समेत प्राथमिकता दिई डिजाईन गर्नु पर्नेछ।
- (ख) कार्यक्रम संचालन गर्दा स्थानीय सरोकारवालाहरू, उपभोक्ता, स्थानीय तह तथा प्रदेश स्तरीय कार्यालहरू र जनप्रतिनिधिहरूसँग समेत प्रत्यक्ष समन्वय गर्ने ।
- (ग) कार्यक्रमहरू संचालन गर्दा क्रमशः उपल्लो तटीय क्षेत्रबाट तल्लो तटीय क्षेत्रमा सञ्चालन गर्दै जानु पर्नेछ।

३.२. नदी/खोला किनारा तटबन्ध / स्थिरिकरण/ नियन्त्रण/व्यवस्थापन (स्पर / डाइक / बायोइन्जिनियरिङ)

चुरे क्षेत्रबाट निस्केका तथा यस क्षेत्र भई बग्ने नदीहरूबाट वर्षेनी नदी किनारा कटान, क्षयीकरण जस्ता समस्याहरू हुने गर्दछ। यस्ता समस्याहरू लाई सम्बोधन गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो । नदी /खोला किनारा स्थिरिकरण / नियन्त्रण सम्बन्धी कार्य सञ्चालन गर्दा छनौट गरिएका नदी प्रणालीमा नदी प्रणाली एकीकृत स्रोत व्यवस्थापन योजनाले तोकेको स्थानमा सोही योजनाले तोकेका प्रकृतिको कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ । नदी किनारा स्थिरिकरणका लागि नदी किनारमा संरचनाको निर्माण गर्दा नदी बहावको लागि प्राविधिक रूपले आवश्यक पर्ने नदीको बहाव क्षेत्र नघट्ने गरी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।

  5 



३.२.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) यो कार्य संचालन गर्दा बायो-इन्जिनियरिङ्ग प्रविधिको साथै अन्य सिभिल संरचनाहरू जस्तै तटबन्ध, स्पर र चेकड्याम आदि निर्माण गर्न सकिने छ ।
- (ख) नदी / खोलाको बहाव क्षेत्रको लागि आवश्यक ठाउँ छोडेर नदी र खोलाको अर्को किनारामा कटान नबढ्ने गरी निर्माण गर्नु पर्नेछ र तटबन्धको संरचना निर्माण गर्दा प्राविधिक रूपमा आवश्यक पर्ने लंचिंग एप्रोन, स्टड र स्परहरूको व्यवस्था गर्नु पर्नेछ ।
- (ग) निर्मित संरचनाको दिगो संरक्षण गर्नको लागि सम्भव भएसम्म नदीको दुवै किनारामा हरित पेटिका निर्माण गर्नु पर्नेछ ।
- (घ) यो कार्यक्रम संचालनका लागि स्थलगत अवलोकन पश्चात गर्न सकिने क्रियाकलापहरूको छनौट गरी प्राविधिकको सहयोगमा लागत ईस्टीमेट तयार गरी क्रियाकलाप संचालन गरिनेछ ।
- (ङ) कार्य सञ्चालन गर्दा कार्यान्वयन संगसंगै समितिबाट नियमित रूपले अनुमगन कार्य पनि गरिनेछ ।

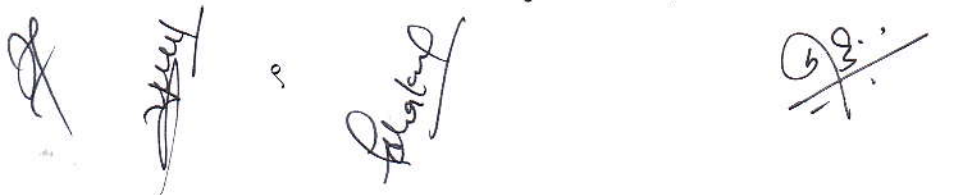
३.२.२. ध्यान दिनुपर्ने विषयहरू:

यो कार्यक्रम संचालन गर्दा निम्न विषयहरूमा विशेष ध्यान दिनु पर्दछ

- (क) नदी तथा खोलाको बहाव तथा गेग्रान थुप्रान क्षेत्र र वगर नमिचिने गरी संरचना निर्माण गर्नु पर्नेछ ।
- (ख) नदी / खोलाको कुनै एक किनारा संरक्षणको लागि निर्माण गरिएको संरचनाको कारण अर्को किनारा तर्फ क्षति नहुने गरी कार्यक्रम संचालन गर्नु पर्नेछ । सम्भव भएसम्म दुवै किनारा संरक्षण गर्ने व्यवस्था मिलाउनु पर्नेछ ।
- (ग) नदीको गहिराई बढ्दा दायाँबायाँ निर्मित संरचनाहरू भत्किने हुँदा नदीखोलाको गहिराई नियन्त्रणमा समेत ध्यान दिई संरचना डिजाईन गर्नु पर्नेछ ।
- (घ) संरक्षण कार्यपश्चात् प्राप्तहुने नदी उकास जग्गाहरूको विवरण तयार गरी सम्भावित उपयोग योजना समेत तयार गर्नुपर्दछ ।

३.३. हरित पेटि निर्माण

तटबन्ध निर्माण गरे पश्चात संरक्षित तथा नदी उकास जग्गा मध्ये सार्वजनिक वा वन क्षेत्रको जग्गा अतिक्रमण हुने, निजी जग्गा भए खेतीपाती पुनः शुरु हुने तथा खुला चरिचरन हुँदा कतिपय तटबन्ध भत्किन सक्छन्। वर्षाको भेल थेगन नसकी तटबन्ध तोडिएर गाउँवस्ती र खेतीमा बाढी पस्न सक्छ । यस्ता जग्गाहरूमा हरियाली अभिवृद्धि गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम



राखिएको हो । राष्ट्रिय भू-उपयोग नीति, २०७२ ले सडक, पोखरी र खोलाको दायाँ-बायाँ हरित पेटी निर्माण गर्न अभिप्रेरित गरेको छ । सोही नीतिमा नदी नालाहरूको प्राकृतिक बहाव, सीमा र मापदण्डलाई असर पर्ने गरी भूमिको प्रयोग गर्न नपाइने प्रावधान समेत रहे अनुरूप नदी उकास जग्गामा वृक्षरोपण गरी वन विकास गरिने छ । यसरी वृक्षरोपण गर्दा निजी स्वामित्वको जग्गा भएमा निजी वन, सरकारी वा सार्वजनिक जग्गा भएमा संरक्षणमुखी सामुदायिक वन वा समुदायमा आधारित वनको विकासका निम्ति प्रोत्साहन गर्न समेत राष्ट्रिय भू-उपयोग नीति, २०७२ ले अभिप्रेरित गर्दछ ।

यसरी निर्मित संरचनाहरूलाई आधार मानी वृक्षरोपण गर्दा बायो इन्जिनियरिंग कार्यको समायोजन भई संरचनाको आयु बढाई दिगोपनामा वृद्धि हुनाका साथै नदी उकास जग्गाको उत्पादकत्व तथा उपयोगिता समेत वृद्धि हुनेछ ।

३.३.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) तटबन्धको बाहिरी भागको सीमाबाट ३० (तीस) मिटर चौडाईसम्मको क्षेत्रलाई हरित पेटीको रूपमा विकास गर्न सकिने छ ।
- (ख) कतिपय अवस्थामा तटबन्धको भित्री सीमाबाट ५ देखि ३० मिटर चौडाईसम्म वा दुई स्परहरूको बीचमाको भू-भागमा पानीको बहावको गति कम गर्न सक्ने कांस, बाँस, खयर, बबुल र अन्य उपयुक्त प्रजातिको वृक्षरोपण गर्न सकिनेछ ।
- (ग) निजी जग्गा भएमा जग्गाधनीलाई परम्परागत खेतीको सट्टा हरित क्षेत्रको रूपमा विकास गर्न उत्प्रेरित हुने गरि तटबन्धमा लगानी गर्नुपर्छ, त्यस्तो निजी जग्गामा फलफूल बगैँचा समेत व्यवस्थापन गर्न सकिन्छ ।
- (घ) कतिपय नदी तथा खोला किनारमा तटबन्ध निर्माण नगरी पनि नदी कटान नियन्त्रण गर्न नदी / खोला को दुवै किनारा तर्फ हरित पेटी निर्माण गर्न सकिनेछ ।
- (ङ) उपभोक्ता समिति गठन तथा छनौट पश्चात समितिका प्राविधिकको सहयोगमा हरित पेटिका निर्माण गर्ने क्षेत्रको सर्वेक्षण तथा नक्सांकन कार्य गरी लागत अनुमान तयार गरिनेछ ।
- (च) गठित उपभोक्ता समितिले लागत अनुमान बमोजिम हरित पेटिका निर्माण गर्नेछ । यस शिर्षकको रकम हरित पेटिका क्षेत्रको तारवार गर्न, वृक्षरोपण गर्न र संरक्षणको निमित्त खर्च गर्न सकिने छ ।
- (छ) लागत अनुमान बमोजिमका विरुवा खरिद तथा ढुवानीको कार्य कार्यान्वयन निकायबाट पनि गर्न सकिनेछ ।

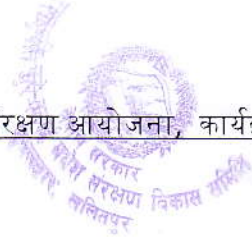




१०







३.३.२. ध्यान दिनुपर्ने विषय:

- (क) हरित पेटिको संरक्षण र सदुपयोगको लागि उपभोक्ता समिति गठन गरी सम्बन्धित निकायमा दर्ता गराउन सकिने छ। मौजुदा समूह / समिति / संस्थाहरू भएमा सोहीलाई प्राथमिकता दिइने छ। नीजि जग्गाको हकमा सम्बन्धित जग्गा धनी समेतलाई जिम्मेवार बनाई कार्यक्रम संचालन गर्न सकिनेछ।
- (ख) रोपिएका विरुवाहरूको स्याहार र संरक्षण अनिवार्य शर्त हुनेछ।

३.४. भूमिगत जल पुनर्भरण र सतह मुनिको पानी उपयोग (चुरे तथा भावर क्षेत्रमा)

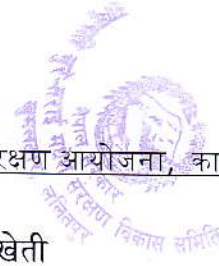
चुरे तथा भावर क्षेत्र प्राकृतिक रूपमा नै पानीको पुनर्भरण क्षेत्र हो। तसर्थ वर्षातको पानी जमिनभित्र बढी भन्दा बढी प्रवेश गराई भूमिगत जलको मात्रा अभिवृद्धि गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो। भावर क्षेत्रमा सतहमा पानी नदेखिने तर जमिनभित्र पानीको बहाव रहने भएकोले यस्ता पानीको सतह उकास गरी भूमिगत जल उपभोगमा वृद्धि गर्नु यस कार्यक्रमको अर्को उद्देश्य रहेको छ। यसका लागि जल सतह उकास गर्न जमिनभित्र बाँध आदि जस्ता उपयुक्त संरचनाहरू निर्माण गर्न सकिनेछ।

३.४.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) यो क्रियाकलाप संचालनका लागि स्थान छनौट पश्चात लागत ईस्टीमेट तयार गरी कार्य संचालन गरिने छ।
- (ख) यसरी बनाईएका पोखरीहरूमा माछा पालन, सिचाई, पर्यापर्यटन र अन्य घरायसी प्रयोजनमा उपयोग गर्न सकिनेछ। पोखरी निर्माण गर्दा प्राकृतिक सुन्दरतालाई नविगारी र बन्यजन्तुलाई समेत सहज हुनेगरी संरचना निर्माण गर्नुपर्नेछ।

३.४.२. ध्यान दिनुपर्ने विषय:

- (क) यो कार्यक्रम संचालन गर्दा समितिबाट गरिएको Aquifer Mapping and Sensitivity Analysis in Watershed System of Chure Region सम्बन्धमा भएको अध्ययनले सिफारिस गरेका स्थलहरूलाई प्राथमिकतामा राखी कार्यक्रम संचालन गर्न सकिनेछ।
- (ख) स्थान छनौट गर्दा स्थानीय वासिन्दाहरूसँग छलफल गरी जानकार व्यक्तिहरूको संलग्नतामा स्थान छनौट गर्नुपर्नेछ।
- (ग) पोखरीहरूको उपयोगको विषयसमेत हुने भएकोले स्थानीय तहको सहकार्यमा कार्य संचालन गर्दा प्रभावकारी हुनेछ।



३.५. भिरालो जग्गामा बहुवर्षीय (फलफुल) खेती

चुरे क्षेत्रको भू-वनोटको अवस्था हेर्दा कम खनजोत भए पुग्ने खालको बाली उपयुक्त हुने देखिन्छ। तसर्थ चुरेका भिराला भू-भागहरूमा रहेका (सरकारी, सार्वजनिक तथा निजी) जग्गामा बहुवर्षीय (फलफुल) खेती गरी भू-क्षय नियन्त्रणको साथसाथै रोजगारी र उत्पादनमा वृद्धि गरी सिमान्तकृत कृषकहरूको जीविकोपार्जनमा सहयोग पुर्याउने, भिरालो पाखा हरियाली र वातावरणीय संरक्षणमा सहयोग पुग्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

३.५.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

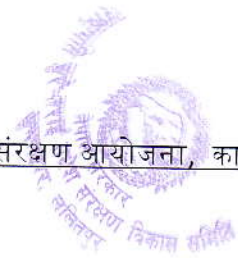
- (क) यो कार्यक्रम संचालन गर्न सम्बन्धित सरोकारवालाहरूसंगको समन्वयमा संभाव्य क्षेत्र पहिचान गरी उपयुक्त जात तथा प्रजातिहरू समेत निश्चित गर्नु पर्नेछ।
- (ख) यस किसिमको क्षेत्र पहिचान गर्दा सार्वजनिक जग्गा वा सामुदायिक वन क्षेत्र, क्षतिग्रस्त भूमि वा नदी उकास जग्गालाई प्राथमिकता दिइनेछ।
- (ग) सार्वजनिक जग्गाहरूको हकमा रोपिएका विरुवा संरक्षणको लागि घेरावारको समेत व्यवस्था गर्न सकिनेछ।
- (घ) लागत अनुमान बमोजिमका फलफुलका विरुवा खरिद तथा ढुवानीको कार्यमा आवश्यकता अनुसार सहयोग र सहजीकरण गर्न सकिनेछ।

३.५.२. ध्यान दिनुपर्ने विषय:

सार्वजनिक जग्गाहरूमा रोपण गरिएका बोटविरुवाहरूबाट हुनसक्ने आम्दानीको व्यवस्थापनको लागि स्थानीय सरकार, सामुदायिक वन तथा अन्य उपलब्ध संस्थाहरूलाई समेत साझेदार बनाउन सकिनेछ।

३.६. ताल तलैया/संरक्षण पोखरी/रिचार्ज पोखरी निर्माण, संरक्षण तथा व्यवस्थापन/सौन्दर्यकरण/जिर्णोद्वार

चुरे भावर तथा तराई क्षेत्र अन्तर्गत रहेका विभिन्न ताल तलैयाको संरक्षण कार्य संचालन गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो। ताल तलैया, संरक्षण पोखरी, रिचार्ज पोखरी जस्ता सिमसारहरू सतही पानीको स्रोत मात्र नभई भूमिगत जल पुनर्भरण (Ground water recharge) का निर्विकल्प माध्यम समेत हुन्। जैविक विविधता, सांस्कृतिक महत्व र पर्यटकीय सम्भावना समेत भएका चुरे तराई मधेस क्षेत्रमा रहेका सिमसारहरूको नक्शांकन प्राथमिकताको आधारमा क्रमशः संरचना निर्माण, जिर्णोद्वार, संरक्षण र व्यवस्थापन गरिनेछ। सिमसार नीति २०६९ का प्रावधानहरूलाई संरक्षण, सदुपयोग र लाभ बाँडफाँडको आधार बनाई कार्य संचालन गर्नु पर्नेछ।



३.६.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) यस अन्तर्गत ताल तलैया संरक्षण, संरक्षण पोखरी निर्माण, रिचार्ज पोखरी निर्माण तथा पुराना ताल तलैयाहरूको जिर्णोद्धार गरी सौन्दर्यीकरण समेत गर्न सकिनेछ । सौन्दर्यीकरण गर्दा प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक सुन्दरता नविगारी गर्नुपर्नेछ ।
- (ख) स्थलगत अवलोकन गरि सञ्चालन गर्न सकिने क्रियाकलापहरूको एकिन तथा स्थान छनौट गर्ने ।
- (ग) स्थानीय स्रोत साधन र सीपको प्रयोगमा वृद्धि गरी रोजगारी बढाउने ।
- (घ) स्वीकृत लागत अनुमान अनुसार स्थानीय उपभोक्ता तथा स्थानीय तहसङ्ग आवश्यकता अनुसार समन्वय गरी कार्यक्रम संचालन गर्ने ।

३.७. बाँस/घाँस/अम्रिसो तथा अन्य विरुवा रोपण तथा व्यवस्थापन

चुरे भावर तथा तराई क्षेत्रमा रहेका भू-क्षय, भू-स्खलन, वन विनास, विकास निर्माण लगायतबाट क्षतिग्रस्त तथा नदी उकास क्षेत्रहरूमा बाँस, घाँस, अम्रिसो लगायतका विरुवाहरू रोपण गरी क्षतिग्रस्त जमिनको पुनर्स्थापना तथा नदी कटान नियन्त्रण र हरियाली कायम गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो ।

३.७.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) यो कार्यक्रम संचालन गर्न प्राविधिकहरूद्वारा उपयुक्त स्थान छनौट तथा सर्वेक्षण कार्य गरि लागत अनुमान तयार गरिनेछ ।
- (ख) लागत अनुमान बमोजिमका विरुवा खरिद तथा ढुवानीको कार्य कार्यान्वयन निकायबाट पनि गर्न सकिनेछ ।

३.७.२. ध्यान दिनुपर्ने विषय:

- (क) यो कार्यक्रम संचालन गर्दा उपल्लो तट स्थित भू-क्षय र पहिरो ( भू-स्खलन ) ग्रस्त स्थलहरूलाई प्राथमिकता दिनुपर्नेछ ।
- (ख) रोपिएका विरुवाको रेखदेख तथा स्याहार संभार गरी हुर्काउने व्यवस्था गर्नु पर्नेछ ।

३.८. तारबार सहित वृक्षरोपण

चुरे-तराई क्षेत्रमा चरिचरनको ठुलो समस्या तथा जंगली जनावरहरूको अनियन्त्रित आवागमन हुने भएकोले यस्ता स्थानहरूमा भए गरेका वृक्षरोपण कार्यको लगानी अनुरूप प्रतिफल नआउने / नदेखिने भएकोले त्यस्ता क्षेत्रहरूमा भू-क्षय न्यूनीकरणमा टेवा पुग्ने, नदी उकास तथा खेर

गएका जग्गा वा क्षतिग्रस्त जग्गाहरूमा तारवार सहितको वृक्षरोपणबाट हरियाली कायम गरिराख्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

३.८.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) यो कार्यक्रम संचालन गर्न प्राविधिकहरूद्वारा उपयुक्त स्थान छनौट तथा सर्वेक्षण कार्य गरि लागत अनुमान तयार गरिनेछ।
- (ख) लागत अनुमान बमोजिम वृक्षरोपणका लागि चाहिने विरुवा कार्यान्वयन निकायको नर्सरीबाटै उपलब्ध गराईने छ। विरुवा उपलब्ध हुन नसकेको अवस्थामा चाहिने जति विरुवा खरिद तथा ढुवानीको कार्य कार्यान्वयन निकायबाट पनि गर्न सकिनेछ।

३.८.२. ध्यान दिनुपर्ने विषय:

- (क) रोपिएका विरुवाको रेखदेख तथा स्याहार संभार गरी हुर्काउने व्यवस्था गर्नु पर्नेछ।

३.९. नदी उकास जग्गामा तारवार सहितको वृक्षरोपण

चुरे क्षेत्र अन्तर्गतका नदी उकास जग्गामा वनजन्य प्रजाती रोपण तथा फलफुल खेती विस्तार गरी भू-क्षय नियन्त्रणको साथसाथै रोजगारी र उत्पादनमा वृद्धि गरी स्थानीयको जीविकोपार्जनमा सहयोग पुर्याउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

३.९.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) यो कार्यक्रम संचालन गर्न फलफुल खेती गर्न सकिने संभाव्य क्षेत्रको पहिचान गर्नु पर्नेछ
- (ख) सम्भाव्य क्षेत्र पहिचान गर्दा पुनर्स्थापना गर्न सकिने क्षतिग्रस्त भूमि वा नदी उकास जग्गालाई प्राथमिकता दिइनेछ।
- (ग) यो कार्यक्रम नीजि भोगचलनको जग्गामा समेत सञ्चालन गर्न सकिनेछ।
- (घ) यो क्रियाकलाप संचालनका लागि स्थान छनौट गर्दा सम्बन्धित सरोकारवालाहरूसङ्ग समन्वय गरिनेछ।
- (ङ) विरुवा छनौट गर्दा स्थानीय वातावरणमा हुर्कन सक्ने र छिटो उत्पादन दिने खालका प्रजाति छनौट गर्नु पर्नेछ।

३.९.२. ध्यान दिनुपर्ने विषय:

- (क) रोपिएका विरुवाको रेखदेख तथा स्याहार संभार गरी हुर्काउने व्यवस्था गर्नु पर्नेछ।

३.१०. जैविक प्रविधि मार्फत सडक पाखो संरक्षण

चुरे क्षेत्र अन्तर्गत संचालन हुने विकासका पूर्वाधार निर्माण कार्य अन्तर्गत सडक निर्माण कार्य प्रमुख हो। सडकहरू निर्माण गर्दा संरक्षणका संरचना बिना नै निर्माण गरिने हुँदा यसबाट भू-क्षयको मात्रामा वृद्धि हुने सम्भावना अत्याधिक हुन्छ। यसले गर्दा गाउँबस्ती तथा खेतियोग्य

of

198

Shah

95

जमिनमा क्षति पुग्नाको साथै निर्मित सडकमा समेत अत्याधिक क्षति पुग्न जाने गर्दछ । तसर्थ यस्ता अव्यवस्थित सडकका तल माथिका पाखाहरूमा वृक्षरोपण गरेर वा अन्य ससाना जैविक संरचनाहरू निर्माण गरेर संरक्षण गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो । विभिन्न प्रजातिका सौन्दर्य प्रदायक बोटविरुवाहरू रोपण तथा खाली रहेका सरकारी, तथा नीजि जग्गामा फलफुल खेती विस्तार गरी भू-क्षय नियन्त्रणको साथसाथै रोजगारी र उत्पादनमा वृद्धि गरी स्थानीयको जीविकोपार्जनमा सहयोग पुर्याउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो ।

३.१०.१. संचालन गर्न सकिने क्रियाकलापहरू:

यस कार्यक्रम अन्तर्गत निम्नानुसारका क्रियाकलापहरू गर्न सकिनेछ ।

- (क) यसमा अम्रिसो, भुजेत्रो, खसखस, खर, कास, बावियो, बाँस जस्ता घाँस तथा सिसौ, खयर जस्ता बहुउपयोगी वन प्रजाति रोपण गरिनेछ । कपुर, धुपी, विभिन्न प्रकारका फूलहरू रोपण गरी सडक सौन्दर्य समेत अभिवृद्धि गर्न सकिनेछ । स्थानीय क्षेत्रको वातावरणमा हुर्कन सक्ने फलफूलका विरुवा खेती पनि गर्न सकिने छ ।
- (ख) पानीको वहावबाट सुरक्षित गर्न भिरालो सडकपाखामा समोच्चरेखा, फिसवोन आदि पद्धतिमा घाँस रोपण जस्ता कमखर्चिलो भू-संरक्षण प्रविधि अपनाउन सकिनेछ ।
- (ग) सडकमा जथाभावी बग्ने पानीको सुरक्षित निकासको लागि नालीको व्यवस्था गर्ने, रिपर्याप, स्टोन पिचिग गर्ने र सडकपाखाका खोलसीहरूको संरक्षणको लागि चेकड्याम, रिटेनिंगवाल, ब्रेस्टवाल जस्ता संरचनाहरू सडक निर्माण गर्ने निकायबाट गर्ने गरी अन्य जैविक संरचनाहरू पनि निर्माण गर्न सकिनेछ ।

३.१०.२. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) स्थलगत निरीक्षण गरी उपयुक्त क्रियाकलापको छनौट गर्ने ।
- (ख) वृक्षरोपणको लागि उपयुक्त प्रजाति तथा संरक्षणको लागि उपयुक्त संरचना छनौट गर्ने ।
- (ग) वृक्षरोपण गर्दा संरक्षणको लागि आवश्यक परेमा वार बन्देज समेत गर्न सकिनेछ ।

३.१०.३. ध्यान दिनुपर्ने विषयहरू:

- (क) वृक्षरोपणका लागि हलुका तथा सदावहार प्रजातिका विरुवाहरू छनौट गर्ने ।
- (ख) यातायात आवागमनमा सहजताका लागि मध्यम साईजका रुखविरुवाहरू रोपण गर्नुपर्नेछ ।
- (ग) वृक्षरोपणको लागि विरुवा छनौट गर्दा हुरीबतासबाट सडकमा दुर्घटना हुने किसिमका विरुवा वृक्षरोपण गर्न पाइने छैन ।

### ३.११. पर्यापर्यटन प्रवर्धन

चुरे तराई मधेश क्षेत्र विशिष्ट भूगोल र जैविक विविधतायुक्त क्षेत्र हो । नेपालको करीव आधा जनसंख्या यसै भू-भागमा आश्रित रहेको छ । जनकपुर, लुम्बिनी जस्ता सांस्कृतिक महत्वका स्थानहरू पनि यसै क्षेत्रमा पर्दछन् । यसरी यस क्षेत्रमा रहेको विशिष्ट भूगोल, जैविक विविधता, सांस्कृतिक महत्वका स्थानहरूमा पर्यटकीय सम्भावना प्रचुर रहेको छ । संरक्षणका लागी केही लगानी थप गर्दा पर्यापर्यटनमा अभिवृद्धि भई स्थानिय समुदायको आयआर्जनमा समेत टेवा पुग्ने हुँदा संरक्षण कार्य सँगसँगै पर्यापर्यटन विकास कार्यमा समेत सहयोग पुर्याउने यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेको छ ।

#### ३.११.१. संचालन गर्न सकिने क्रियाकलापहरू:

यस कार्यक्रम अन्तर्गत निम्नानुसारका क्रियाकलापहरू गर्न सकिनेछ:-

- (क) सिमसार क्षेत्रहरूको विकास तथा विस्तार ।
- (ख) वनस्पति उद्यानहरूको विकास तथा विस्तार ।
- (ग) चिडियाखाना, प्राकृतिक या सांस्कृतिक पदमार्ग तथा बगैँचा / फूलवारी आदि जस्ता पर्यटन पूर्वाधारहरूको विकास निर्माण तथा सौन्दर्यीकरण ।
- (घ) तालतलैया, सिमसार क्षेत्रमा जलयात्राका पूर्वाधार विकास ।
- (ङ) सिमसारमा आधारित नमूना पर्यटन विकास कार्यक्रमहरू ।

#### ३.११.२. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) सम्बन्धित स्थानीय तहसँग समन्वय गरी कार्यक्रम संचालन बारे जानकारी गराउने ।
- (ख) स्थलगत अवलोकन गरि पर्यापर्यटन विकासको लागि गर्न सकिने स्थान तथा क्रियाकलापहरूको छनौट गर्ने ।

#### ३.११.३. ध्यान दिनुपर्ने विषयहरू:

- (क) निर्मित संरचनाहरूले पर्यापर्यटनमा भूमिका खेल्न सक्ने नसक्ने बारेमा विवेचना गर्नुपर्ने र त्यस्ता संरचनाको सदुपयोग र दिगोपना एवं पर्यटन पूर्वाधार विकास कार्यको निरन्तरताको लागि स्थानीय तहसँग साझेदारी गर्न सकिनेछ ।
- (ख) तालतलैया र सिमसार क्षेत्रका प्राकृतिक वातावरण, जैविक विविधता, पारीस्थितिकीय प्रणालीमा नकारात्मक प्रभाव नपर्ने गरी पर्यापर्यटनका कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्नेछ ।
- (ग) यस्ता कार्यक्रम संचालनमा रड, सिमेन्ट, ब्लक, जस्ता निर्माण सामग्रीको प्रयोग निरुत्साहित गरिने छ ।

१६

३.१२. जैविक वातावरणीय एवम् भू-स्खलनको हिसावले अति संवेदनशील रहेका वन क्षेत्र (Hot Spot) को तारवार सहित पुनरोत्पादन संरक्षण तथा व्यवस्थापन

चुरे क्षेत्रमा रहेका वन क्षेत्र अन्तर्गत जैविक वातावरणीय एवम् भू-स्खलनको हिसावले अति सम्वेदनशील वन क्षेत्रहरूमा तारवार गरी संरक्षण गर्ने र पुनरोत्पादन क्षमता बढाई वन क्षेत्रको हैसियत वृद्धि तथा विकास गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो।

३.१२.१. क्षेत्र छनोटका आधारहरू:

यो कार्यक्रम संचालन गर्न क्षेत्र छनोट गर्दा निम्न आधार लिनु पर्नेछ:-

- (क) बाढी, पहिरो र भू-स्खलन रोकथामको लागि संरक्षण गर्नुपर्ने वन क्षेत्र।
- (ख) अतिक्रमित वा अतिक्रमणको चपेटामा पर्न सक्ने वन क्षेत्र।
- (ग) कम हैसियतको वनमा पुनरोत्पादन तथा चरिचरनबाट संरक्षण गर्नुपर्ने वनक्षेत्र।
- (घ) नदी किनारको नदी उकास क्षेत्र पनि हट - स्पट क्षेत्रहरू हुन सक्नेछ।
- (ङ) जैविक विविधता प्रवर्द्धन हुन सक्ने क्षेत्र।

३.१२.२. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) छनोट गरिएका क्षेत्रको सर्वेक्षण गरि लागत अनुमान तयार गर्ने।
- (ख) लागत अनुमान बमोजिम कार्यक्रम संचालन हुने सामुदायिक वन / साझेदारी वनको क्षेत्र भएमा सम्बन्धित उपभोक्ता समितिसंग सम्झौता गरी वा उपभोक्ता समिति गठन गरि सम्झौता पश्चात कार्य संचालन गरिनेछ।
- (ग) वृक्षरोपण वा पुनरोत्पादन संरक्षण कार्यको लागि तारवार समेत गर्न सकिनेछ।
- (घ) चरीचरन, वन डढेलोबाट वृक्षरोपण गरिएका विरुवाहरू वा पुनरोत्पादन संरक्षण गर्न हेरालु राख्न सकिनेछ।

३.१३. कृषि वन प्रवर्धन

चुरे क्षेत्रमा कृषि वन प्रणाली विकास तथा विस्तारको लागि यो कार्यक्रम राखिएको हो। नदी प्रणालीमा सञ्चालित संरक्षण कार्यबाट उकास भएका नदी उकास जग्गा, सामुदायिक, सार्वजनिक, नीजि, संस्थागत, अतिक्रमणबाट फिर्ता भएका तथा हैसियत विग्रिएका वन क्षेत्रहरूमा यो कार्यक्रम संचालन गर्न सकिनेछ। यसबाट हरियाली प्रवर्धनका साथै भूक्षय नियन्त्रणमा समेत सहयोग पुग्नेछ। स्थानीय स्तरमा रोजगारी तथा भुमि उत्पादकत्वमा वृद्धि गरी स्थानीय सिमान्तकृत वर्गको जीविकोपार्जनमा प्रत्यक्ष सहयोग पुर्याउन समेत यस कार्यक्रमले सहयोग पुर्याउन सक्नेछ।

३.१३.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) कार्य संचालनका लागि क्षेत्र छनौट गर्ने ।
- (ख) कार्यक्रम संचालन गर्दा समितिबाट तयार गरिएको कृषि वन प्रणाली प्रवर्धन कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि २०७६ र समितिबाट आ.व. २०७६/७७ मा गरिएको Developing Agroforestry Models in the Chure conservation Area सम्बन्धमा भएको अध्ययनले सिफारिस गरेका प्रकृया तथा प्रविधिहरू अवलम्बन गरी कार्यक्रम सञ्चालन गर्न सकिनेछ ।

३.१४. रेन वाटर/रन अफ हार्वेस्टिङ्ग ड्याम

वर्षातको पानीको बहाव कम गरी माटो, गिट्टी, ग्रेगर, बालुवा बगन नदिन चुरे पहाडको भिरालो स्थानमा पानी बग्ने खोल्सीको तलतिर ड्याम बनाई पानीको बहाव न्युन गर्नु पर्दछ । पुन त्यस स्थानबाट तल विस्तारै पानी बगेपछि अर्को ड्याम बनाउनु पर्छ र पानी बग्ने खोल्सीहरूमा छेकबाँध बनाउनु पर्छ । चुरेको उपल्लो क्षेत्रहरूमा र गल्छी बनेको क्षेत्रहरूमा पानी र माटो Trap गरि Runoff न्यूनीकरण गर्नले Sedimentation Load मा कमि आई तल्लो क्षेत्रका जमीन कटान र पुरिने कार्य न्यूनीकरण हुनेछ । यसरी समितिको स्थापनाकाल देखिको मूल नारा "चुरेको माटो चुरेलाई, सफा पानी सबैलाई" भन्ने नारा कार्यान्वयन हुनेछ ।

३.१४.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) चुरे पहाडको फेदमा पाईने प्राकृतिक रूपले तीनतिर उच्च भाग भएको र एकातर्फ मात्र बाँध बनाउँदा पोखरी तयार हुने खोल्सीहरूमा तलदेखि माथिसम्म लहरै पोखरी निर्माण गर्न सकिनेछ ।
- (ख) कार्यान्वयन निकायले रेन वाटर/ रन अफ हार्वेस्टिङ्ग ड्यामको लागत अनुमान तयार गर्नु पूर्व उपयुक्त स्थानको पहिचान गरि स्थलगत निरीक्षण, प्राविधिक तथा सामाजिक अवस्थाको विश्लेषण सहित सर्वेक्षण गर्नुपर्नेछ ।
- (ग) स्वीकृत बजेटको परिधि भित्र रही डिजाईन तथा लागत अनुमान तयार गरी सो को आधारमा कार्य संचालन ति गरिने छ ।

३.१४.२. ध्यान दिनुपर्ने विषयहरू:-

- (क) यस कार्यक्रम अन्तर्गत निर्मित पोखरीहरू पनि अन्य उद्देश्य जस्तै माछा पालन, सिंचाई, खानेपानी आदिमा समेत प्रयोग गर्न सकिने भएको हुँदा कार्यक्रमको सम्झौताको चरणमा नै यस विषयमा विचार गर्नु पर्नेछ ।
- (ख) खोला, खहरेको अवस्था हेरी डिजाईन तयार गर्नु पर्नेछ ।



 १८







### ३.१५. सिंचाई कुलो निर्माण

सुख्खा क्षेत्रको रूपमा परिणत हुँदै गईरहेको चुरे क्षेत्रमा पानीमा पहुँच बढाउन वा पानीको उपयोगिता बढाउन पुराना सिंचाई कुलो तथा मुहानहरू मर्मत वा नयाँ सिंचाई कुलोहरू निर्माण गरेर सिंचित क्षेत्र विस्तार गरी भूमी उत्पादकत्वमा वृद्धि गर्न सहयोग पुर्याउन यो कार्यक्रम राखिएको हो ।

#### ३.१५.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) यो कार्यक्रम संचालनका लागि प्राविधिकहरूद्वारा स्थलगत अवलोकन गरी सम्भाव्य स्थान छनौट गरिनेछ ।
- (ख) सम्भाव्य स्थान छनौट पश्चात लाभग्राही समुदायसँग आवश्यकता अनुसार समन्वय गरी गर्नु पर्ने क्रियाकलापहरू छनौट गर्ने ।
- (ग) प्राविधिक सर्भेक्षण गरी उपलब्ध बजेटको आधारमा लागत अनुमान गरी कार्यक्रम संचालन गर्ने ।

#### ३.१५.२. ध्यान दिनुपर्ने विषयहरू:

पानी उपयोग संरचना निर्माणको साथसाथै कृषि कार्यको लागि भुमिको उत्पादकत्व वृद्धि गराउन ।

### ३.१६. वन विरुवा उत्पादन/ खरिद तथा वितरण

चुरे क्षेत्रको प्रमुख समस्याको रूपमा रहेको भू-क्षय नियन्त्रणको सरल र सुपथ विधि भनेको वृक्षरोपण नै हो । यसका लागि खाली रहेको वन क्षेत्र तथा जनसमुदायको जग्गामा वृक्षरोपण गरी वन क्षेत्र बाहिर समेत वन विकास गर्नु पर्नेछ । यसरी वृक्षरोपण गरी रुखले ढाकेको क्षेत्रको विस्तार गर्न कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरू मार्फत विरुवा उत्पादन वा खरिद गरी वितरण गर्न यो कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ । विरुवा वितरण गर्दा सबै प्रकारका वनहरू जस्तै: सरकारद्वारा व्यवस्थित वन, सामुदायिक वन, निजी वनहरू आदीमा जनसहभागीता परिचालन गरी वृक्षरोपण गर्न अभिप्रेरित गरिनेछ ।

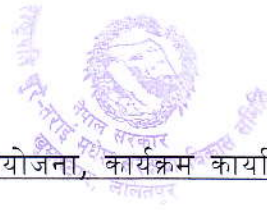
#### ३.१६.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) कुन कुन प्रजातिका विरुवाहरूको माग छ सो को प्राथमिक सर्भेक्षण गरी माग बमोजिम र वृक्षरोपण गरिने क्षेत्रको लागि चाहिने विरुवा संख्या र प्रजाति एकीन गर्ने साथै सोही अनुसार विरुवा उत्पादनको लागि कार्ययोजना (समय तालिका) तयार गर्ने ।
- (ख) विरुवा उत्पादनको कायदिशमा कुन कुन प्रजातिका कति विरुवा उत्पादन गर्ने हो स्पष्ट रूपमा खुलाउनु पर्नेछ ।

  १९







राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्याविधि, २०८२/८३

- (ग) गुणस्तरयुक्त तथा स्थानियस्तरमा सफल भएका रुख विरुवाका वीउलाई मात्र छनोट गर्नुपर्नेछ ।
- (घ) यसरी उत्पादन हुने विरुवा समुदायमा आधारित वन, सरकारद्वारा व्यवस्थित वन, सार्वजनिक तथा सरकारी जग्गामा वृक्षारोपण, चुरे दिवस, वातावरण दिवस, वन महोत्सव जस्ता कार्यक्रमहरूमा सर्वसाधारणहरूलाई निजी जग्गामा वृक्षारोपणका लागि वितरण गरिनेछ ।
- (ङ) विरुवा उत्पादन तथा वितरणको लागि सभै, स्थलगत निरीक्षण, कार्ययोजना तयारी तथा रिपोर्टिङ लगायतका काममा आवश्यक पर्ने ईन्धन, मसलन्द आदिमा यो शीर्षकबाट खर्च गर्न सकिनेछ । सो को लागि पहिला नै लागत इस्टिमेटमा खुलाउनु पर्नेछ ।
- (च) विरुवा उत्पादन भई वितरण गर्दा विरुवा वितरण रजिष्टरमा लगत राख्नु पर्नेछ । वितरण गरिएका विरुवाको विस्तृत विवरण अद्यावधिक गरी प्रगति प्रतिवेदनमा समेत समावेश गर्नु पर्नेछ ।
- (छ) कार्यालयबाटै विरुवा उत्पादन गर्न नसकिएमा वा सम्भव नभएमा विरुवा उत्पादक नर्सरीहरूबाट समेत विरुवा खरिद गरी वितरण गर्न सकिनेछ ।
- (ज) उत्पादन भएका रोपण योग्य विरुवाहरू मात्र वितरण गरिनेछ । वितरण भई बाँकि रहेका विरुवाहरू नर्सरीमै मौज्जात राखी संरक्षण गरिनेछ ।
- ३.१६.२. कार्यक्रम सम्पन्न भए पछि प्रगतिमा निम्न विषयहरू समावेश गर्नुपर्नेछ:-
- (क) उत्पादित वा खरिद भएका विरुवाहरूको जात र संख्या
- (ख) वितरणको लगत (सरकारद्वारा व्यवस्थित वन, सामुदायिक वन, निजी वन तथा आवादी जग्गामा, सार्वजनिक पर्ति जग्गामा रोपण गर्न)
- (ग) विभिन्न क्रियाकलापहरूको फोटो

३.१७. नर्सरीमा विरुवा उत्पादनको लागि नर्सरी नाइकेको ज्याला

कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरूबाट संचालन भईरहेको स्थायी नर्सरी तथा बहुवर्षिय विरुवा उत्पादन गर्ने नर्सरीहरूमा वर्ष भरी नै विरुवा उत्पादन तथा संरक्षण लगायतका काम गर्नुपर्ने हुन्छ । यसका लागि नर्सरीमा काम गर्न तालिम प्राप्त नर्सरी नाइके भर्ना गरी वर्षभरी नै काममा लगाई पारिश्रमिक (ज्याला) उपलब्ध गराउने प्रयोजनका लागि यो कार्यक्रम राखिएको छ ।

३.१७.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) उपलब्ध बजेट र स्थायी नर्सरीको संख्याको आधारमा आवश्यक नर्सरी नाइके संख्या तथा मासिक ज्यालदर कायम गरी लागत इष्टिमेट तयार गर्ने

२०८२/८३



(ख) सोको आधारमा नर्सरी नाईके नियुक्त गर्ने ।

(ग) आवश्यकता अनुसार नर्सरी नाईकेलाई विरुवा उत्पादन तथा संरक्षणका विषयमा प्रशिक्षण दिने ।

### ३.१८ बाँसको कलमी विरुवा उत्पादन/खरिद तथा वितरण

चुरे भावर तथा तराई क्षेत्रमा रहेका क्षतिग्रस्त तथा नदी उकास क्षेत्रहरूमा बाँसका कलमी विरुवाहरू रोपण गरी क्षतिग्रस्त जमिनको पुनर्स्थापना तथा नदी कटान नियन्त्रण र हरियाली कायम गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो । यसबाट क्षतिग्रस्त भूमिको उत्पादकत्वमा समेत वृद्धि हुनेछ ।

#### ३.१८.१. कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) यो कार्यक्रम संचालन गर्न प्राविधिकहरूद्वारा उपयुक्त स्थान छनौट तथा सर्वेक्षण कार्य गरि लगत अनुमान तयार गरिनेछ ।

(ख) लागत अनुमान बमोजिम स्वीकृत बजेटको परिधि भित्र रही कलमी विरुवा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईबाटै उत्पादन गर्न वा खरीद गर्न सकिनेछ ।

(ग) उत्पादन भएका रोपण योग्य विरुवाहरू मात्र वितरण गरिनेछ । वितरण गरी बाँकि रहेका विरुवाहरू नर्सरीमै मौज्जात राखी आगामी वर्षको लागि संरक्षण गरिनेछ ।

#### ३.१८.२ ध्यान दिनुपर्ने विषय:

विरुवा खरीद गर्ने वा नर्सरीमा उत्पादन गर्ने भन्ने विषयमा स्पष्ट निर्णय गरी सोही अनुरूप कार्यक्रम संचालन गर्नु पर्नेछ ।

### ३.१९ क्षतिग्रस्त भूमि पुनरुत्थान

बह्रदो वन विनास, खुल्ला चरिचरण, डढेलो, बाढी पहिरो, भू-क्षय लगायतका कारणले चुरे पहाडहरू दिनप्रति दिन क्षतिग्रस्त हुँदै गएका छन् । वनसँग जोडिएको वा नजोडिएका सार्वजनिक जग्गा अव्यवस्थित उपयोगले समेत क्षतिग्रस्त हुन पुगेको छ । यस्ता क्षतिग्रस्त जग्गाहरूको पुनरुत्थान गरि हरियाली अभिवृद्धि गर्नुका साथै उत्पादकत्व बढाई पुनरुत्थान गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो । यस अन्तर्गत चुरे क्षेत्रको माटो संरक्षण, हरियाली प्रवर्धन, पानीको स्रोत संचितिमा प्रभाव पार्ने र स्थानीय रोजगारी प्रवर्धन गर्ने प्रकृतिका क्रियाकलापहरू सञ्चालन गर्न सकिनेछ ।

#### ३.१९.१ क्रियाकलापहरू:

(क) फलफूल रोपण

(ख) घाँस, बाँस अन्य विरुवा रोपण

- (ग) वन प्रजातिका विरुवाहरू रोपण
- (घ) पुनरोत्पादन (Regeneration) को लागि वार वन्देज व्यवस्थापन।
- (ङ) गह्रा सुधार तथा सिंचाई व्यवस्थापन
- (च) भूमिगत जल पुनर्भरण वृद्धिका लागि संरचनाहरू निर्माण
- (छ) कम खर्चिलो भू संरक्षण प्रविधिहरू

३.१९.२ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) क्षतिग्रस्त जमिनहरूको मापन गरी कार्यसंचालन गर्ने क्षेत्र तय गर्ने ।
- (ख) संचालन गरिने कार्यक्रम वारे जानकारी गराई आवश्यकता अनुसार सम्वन्धित स्थानीय तहसंग समन्वय गर्ने ।
- (ग) स्थलगत अवलोकन गरि पुनरुत्थान क्रियाकलापहरू छनौट गर्ने।
- (घ) स्थानीय उपभोक्तासंग समन्वय गरि प्राविधिकहरूबाट लागत अनुमान तयार गरी स्वीकृत गराएर कार्यक्रम संचालन गरिनेछ।

३.२० बिगत वर्षमा संचालित कार्यहरूको संरक्षण तथा मर्मत सम्भार

यो कार्यक्रम अन्तर्गत भएगरेका कामहरूको थप प्रभावकारीता एवं दिगोपना अभिवृद्धि गर्न आवश्यक व्यवस्थापन गर्ने उद्देश्यले राखिएको कार्यक्रम हो । सानातिना सहयोगमा स्थानिय समुदायहरू समेत परिचालन गरी संचालन गर्न सकिने निम्नानुसारका क्रियाकलापहरू यस कार्यक्रम अन्तर्गत संचालन गर्न सकिनेछ ।

३.२०.१ क्रियाकलापहरू:

- क) निर्मित ईन्जिनियरिंग संरचनाहरूको मर्मत सम्भार
- ख) वृक्षरोपण क्षेत्रको तारवार मर्मत
- ग) वृक्षरोपण क्षेत्रका मरेका विरुवाको ठाउँमा नयाँ रोपण र गोडमेल
- घ) हेरालुद्वारा वृक्षरोपण क्षेत्रको संरक्षण

३.२०.२ कार्य संचालन प्रक्रिया:

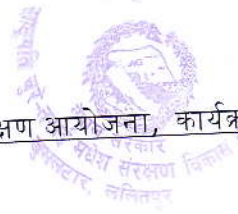
- (क) संचालन गरिने क्रियाकलाप तथा स्थान एकीन गर्ने
- (ख) आवश्यकता अनुसार सरोकारवालाहरूसँग छलफल
- (ग) यो कार्यक्रम संचालन गरिने क्रियाकलाप अनुसार ठेक्काबाट, उपभोक्ता समूहबाट वा अमानतबाट संचालन गर्न सकिनेछ।
- (घ) क्रियाकलापको प्रकृति अनुसार व्यक्तिसँग सम्झौता गरेर पनि यो कार्यक्रम संचालन गर्न सकिनेछ ।



 २२







३.२१ जनताको रहर हरीत शहर कार्यक्रम

राष्ट्रपति चुरे-तराई मधेश संरक्षण विकास समितिको कार्यक्षेत्र भित्र पर्ने मुख्य शहरहरूमा हरियाली शहर बनाउन वृक्षरोपण गर्ने, शहरका सडकका पेटीहरूमा वाटो अवरोध नहुने गरी फुल फुल्ने, फल फल्ने र वास्नादार प्रजातिहरूको वृक्षरोपण गर्ने तथा शहरलाई हरियाली बनाई वातावरणीय संरक्षण बनाउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम ल्याइएको हो। यो कार्यक्रम कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाइमार्फत कार्यान्वयन गरिने छ। शहरका टोल सुधार समिति, उपभोक्ता समिति र निजी घरपरिवार परिचालन गरेर वृक्षरोपण गरिने छ। शहरलाई हरियाली बनाउन स्थानीय तहसँगको समन्वय तथा माग र प्राथमिकताको आधारमा कार्यक्रम कार्यान्वयन गरिने छ।

३.२१.१ कार्यक्रम कार्यान्वयन प्रक्रिया

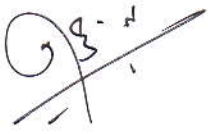
- (क) समितिको कार्यक्षेत्र अन्तर्गतका प्रमुख शहरहरूसँग सम्बन्धित स्थानीय तह तथा सरोकारवाला समूहसँगको समन्वयमा शहरलाई हरियाली बनाउने स्थान छनौट गरी क्रियाकलापहरू पहिचान गरिने छ।
- (ख) सरकारी, पूर्वी तथा शहरका पेटीहरूमा हरियाली बनाउने प्रजातिका विरुवाहरूको वृक्षरोपण गर्न उपभोक्ता समिति र सम्बन्धित प्राविधिकहरूसँगको परामर्शमा लागत अनुमान तर्जुमा गरिने छ।
- (ग) यो कार्यक्रम निजी भोगचलनको जग्गामा समेत सञ्चालन गर्न सकिने छ।
- (घ) शहरको वरिपरी, सडकका पेटीमा वृक्षरोपण गर्न विरुवाहरू खरीद गर्दा प्राविधिकहरूले प्रमाणित गरेका, नर्सरीमा कम्तिमा एक वर्ष रहेका पुराना विरुवा खरीद गरी वितरण गरिने छ।
- (ङ) लागत अनुमान बमोजिम आवश्यक पर्ने हरियाली बनाउने प्रजातिका विरुवा खरीद तथा दुवानीको कार्य कार्यान्वयन इकाईबाट गर्न सकिनेछ।
- (च) यो कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि वन तथा वातावरण मन्त्रालय र अन्तर्गतका निकायहरूबाट तयार गरिएको शहरी वन कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधिलाई पनि मार्गदर्शनको रूपमा लिइनेछ।

३.२२ नर्सरी निर्माण, स्तरन्नोती, व्यवस्थापन तथा फलफूल विरुवा खरीद तथा वितरण

चुरे क्षेत्रको प्रमुख समस्याको रूपमा रहेको भू-क्षय नियन्त्रणको सरल र सुपथ विधि भनेको वृक्षरोपण नै हो। यसका लागि खाली रहेको वन क्षेत्र तथा जनसमुदायको जग्गामा वृक्षरोपण गरी वन क्षेत्र बाहिरसमेत वन विकास गर्नु पर्नेछ। यसरी वृक्षरोपण गरी रुखले ढाकेको





क्षेत्रको विस्तार गर्न कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरू मार्फत विरुवा उत्पादन वा खरिद गरी वितरण गर्न यो कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ । विरुवा वितरण गर्दा सबै प्रकारका वनहरू जस्तै: सरकारद्वारा व्यवस्थित वन, सामुदायिक वन, निजी वनहरू आदीमा जनसहभागीता परिचालन गरी वृक्षरोपण गर्न अभिप्रेरित गरिनेछ। वन नर्सरीको निर्माण तथा स्तरोन्नती गरी गुणस्तरिय विरुवा उत्पादन गरिनेछ।

३.२२.१ कार्यक्रम संचालन प्रकृया:

कुन कुन प्रजातिका विरुवाहरूको माग छ सो को प्राथमिक सर्भेक्षण गरी माग बमोजिम र वृक्षरोपण गरिने क्षेत्रको लागि चाहिने विरुवा संख्या र प्रजाति एकीन गर्ने साथै सोही अनुसार विरुवा उत्पादनको लागि कार्ययोजना (समय तालिका) तयार गर्ने विरुवा उत्पादनको कायदेशिमा कुन कुन प्रजातिका कति विरुवा उत्पादन गर्ने हो स्पष्ट रूपमा खुलाउनु पर्नेछ। प्राविधिकबाट उपयुक्त स्थान छनौट गरी नर्सरी निर्माण गर्नुपर्नेछ।

- (क) गुणस्तरयुक्त तथा स्थानियस्तरमा सफल भएका रुख विरुवाका बीउलाई मात्र छनोट गर्नुपर्नेछ।
- (ख) यसरी उत्पादन हुने विरुवा समुदायमा आधारित वन, सरकारद्वारा व्यवस्थित वन, सार्वजनिक तथा सरकारी जग्गामा वृक्षारोपण, चुरे दिवस, वातावरण दिवस, वन महोत्सव जस्ता कार्यक्रमहरूमा सर्वसाधारणहरूलाई नीजि जग्गामा वृक्षारोपणका लागि वितरण गरिनेछ ।
- (ग) विरुवा उत्पादन तथा वितरणको लागि सर्भे, स्थलगत निरीक्षण, कार्ययोजना तयारी तथा रिपोर्टिङ लगायतका काममा आवश्यक पर्ने ईन्धन, मसलन्द आदिमा यो शीर्षकबाट खर्च गर्न सकिनेछ । सो को लागि पहिला नै लागत इस्टिमेटमा खुलाउनु पर्नेछ ।
- (घ) विरुवा उत्पादन भई वितरण गर्दा विरुवा वितरण रजिष्टरमा लगत राख्नु पर्नेछ। वितरण गरिएका विरुवाको विस्तृत विवरण अद्यावधिक गरी प्रगति प्रतिवेदनमा समेत समावेश गर्नुपर्नेछ।
- (ङ) कार्यालयबाटै विरुवा उत्पादन गर्न नसकिएमा वा सम्भव नभएमा विरुवा उत्पादक नर्सरीहरूबाट समेत विरुवा खरिद गरी वितरण गर्न सकिनेछ ।
- (च) उत्पादन भएका रोपण योग्य विरुवाहरू मात्र वितरण गरिनेछ । वितरण भई बाँकि रहेका विरुवाहरू नर्सरीमै मौज्जात राखी संरक्षण गरिनेछ।

३.२२.२ कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न विषयहरू समावेश गर्नुपर्नेछ:-

- (क) नर्सरी निर्माण तथा स्तरोन्नतीका लागि गरिएका कार्यक्रमहरू
- (ख) उत्पादित वा खरिद भएका विरुवाहरूको जात र संख्या
- (ग) वितरणको लगत (सरकारद्वारा व्यवस्थित वन, सामुदायिक वन, निजी वन तथा आवादी जग्गामा, सार्वजनिक पर्ति जग्गामा रोपण गर्न)
- (घ) विभिन्न क्रियाकलापहरूको फोटो



 २४





३.२३ अग्नी नियन्त्रण सम्बन्धि सामग्री उपकरण तथा सामान (चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो

नियन्त्रणका लागि प्रयोग हुने **Fire Ambulance - for fire suppression**)

चुरे क्षेत्रको वढ्दो क्षयीकरणलाइ नियन्त्रण गर्नका लागि चुरे क्षेत्रमा भएको वन क्षेत्रलाइ संरक्षण गर्नुका साथै खाली पर्ति जग्गाहरुमा वृक्षरोपण गरी हुर्काउन जरुरी रहेको छ । चुरे क्षेत्रमा हुने समस्याहरु मध्ये वन डढेलो पनि एक हो । चुरे क्षेत्रमा हुने वन डढेलोलाई समयमा नै नियन्त्रण गर्नुपर्ने हुन्छ। यसका लागि अग्नी नियन्त्रकहरुलाइ अग्नी नियन्त्रण सम्बन्धि सामग्री उपकरण तथा सामानहरुको आवश्यकता पर्दछ। यिनै सामग्री मध्ये चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो नियन्त्रणका लागि प्रयोग हुने Fire Ambulance एक प्रमुख सामग्रीको रूपमा हुन सक्दछ। यस कार्यक्रम अन्तर्गत चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो नियन्त्रणका लागि प्रयोग हुने Fire Ambulance खरिद गरी अग्नि नियन्त्रण गर्ने निकायलाइ उपलब्ध गराउनका लागि यस कार्यक्रम राखिएको छ।

३.२३.१ कार्यक्रम संचालन प्रकृया:

- (क) चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो नियन्त्रणका लागि प्रयोग हुने Fire Ambulance को विज्ञवाट स्पेसिफिकेशन तयार गरी सार्वजनिक खरिद ऐन, २०६३, सार्वजनिक खरिद नियमावली, २०६४ बमोजिम प्रक्रियाहरु अपनाइ Fire Ambulance खरिद गरिनेछ ।
- (ख) यसरी खरिद गरिएको Fire Ambulance चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो नियन्त्रणका लागि प्रयोग गरिनेछ ।

३.२४ अग्नी नियन्त्रण सम्बन्धि सामग्री उपकरण तथा सामान (**PPE Set, FireJet, Fire swatter, Fire rake, Axe** आदिको सेट)

चुरे क्षेत्रमा हुने समस्याहरु मध्ये वन डढेलो पनि एक हो । चुरे क्षेत्रमा हुने वन डढेलोलाई समयमा नै नियन्त्रण गर्नुपर्ने हुन्छ। यसका लागि अग्नी नियन्त्रकहरुलाइ अग्नी नियन्त्रण सम्बन्धि सामग्री उपकरण तथा सामानहरुको आवश्यकता पर्दछ। यिनै सामग्री मध्ये चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो नियन्त्रणका लागि प्रयोग हुने PPE Set, FireJet, Fire swatter, Fire rake, Axe आदिको सेट सामग्री खरिद गरी अग्नि नियन्त्रण गर्ने निकायमा रहने गरी यस कार्यक्रम राखिएको छ।

- (क) चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो नियन्त्रणका लागि प्रयोग हुने सामग्रीहरु PPE Set, FireJet, Fire swatter, Fire rake, Axe आदिको सेट सार्वजनिक खरिद ऐन, २०६३, सार्वजनिक खरिद नियमावली, २०६४ बमोजिम प्रक्रियाहरु अपनाइ खरिद गरिनेछ ।
- (ख) यसरी खरिद गरिएको सामग्रीहरु PPE Set, FireJet, Fire swatter, Fire rake, Axe आदिको सेट चुरे संरक्षण क्षेत्रमा हुने वन डढेलो नियन्त्रणका लागि प्रयोग हुनेगरी चुरे

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

संरक्षण क्षेत्रमा रहेका र प्रत्यक्ष रूपमा चुरे संरक्षणमा काम गर्ने नेपाली सेना वन तथा पर्यावरण सुरक्षा निर्देशनालय अन्तर्गतका वन तथा पर्यावरण सुरक्षा गणमा नै रहनेछन् ।

परिच्छेद-४

अध्ययन अनुसन्धान सम्बन्धी कार्यक्रम कार्यान्वयन

वार्षिक कार्यक्रम तथा बजेटमा स्वीकृत भएका अध्ययन तथा अनुसन्धानका कार्यक्रमहरू कार्यान्वयन गर्दा निम्नानुसारका विधि तथा प्रकृया अवलम्बन गरिनेछ ।


४.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिका वार्षिक कार्यक्रममा समावेश भएका चुरे संरक्षण र व्यवस्थापन सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धान कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्दा निम्नानुसारको कार्यविधिहरू अवलम्बन गर्नुपर्नेछ ।

- (क) वार्षिक कार्यक्रममा समावेश भएको अध्ययन अनुसन्धान कार्यक्रमहरूको कार्यक्षेत्रगत शर्तहरू (Terms of References) तयार गर्ने ।
- (ख) कार्यक्षेत्रगत शर्तहरूमा अध्ययन कार्यक्रमको उद्देश्यलाई समेट्ने गरी अनुसन्धान कार्य सम्पन्न गर्नको लागि गर्नुपर्ने कार्यहरू जस्तै: अध्ययनका विधिहरू, संकलन र तयार गर्नुपर्ने तथ्यांकहरू, अध्ययन कार्यको लागी आवश्यक पर्ने जनशक्ति, प्रतिवेदनको ढाँचा तथा समयरेखा लगायतका विषयहरू स्पष्ट रूपमा उल्लेख गर्नु पर्ने ।
- (ग) कार्यक्षेत्रगत शर्तहरू तयार गर्दा प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन तथा नियमावली अनुरूप हुने गरी समेत तयार गर्नु पर्ने ।
- (घ) कार्यक्षेत्रगत शर्तहरू अध्ययन अनुसन्धान कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने शाखा आफैले वा परामर्श सेवा खरिद गरि तयार गर्न सकिने ।
- (ङ) कार्यक्रमको कार्यक्षेत्रगत शर्त (TOR) स्वीकृत भैसकेपछि सम्बन्धित शाखाले लागत अनुमान तयार गरी स्वीकृत गराउनु पर्दछ ।
- (च) लागत अनुमान तयार गर्दा प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन नियमावली बमोजिम हुने गरी परामर्श सेवाको लागी खर्च हुने र समितिबाट खर्च हुने लागत अनुमान स्पष्ट रूपमा छुट्टिने गरी तयार गर्नु पर्दछ ।
- (छ) लागत अनुमान तयारीको लागि प्रचलित सार्वजनिक खरिद नियमावलीमा उल्लेखित ढाँचा प्रयोग गर्नु पर्दछ ।
- (ज) लागत अनुमान स्वीकृती पश्चात अध्ययन अनुसन्धान कार्यक्रमको लागतको आधारमा प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन, २०६३ र सार्वजनिक खरिद नियमावली, २०६४









- बमोजिम उपयुक्त खरिद प्रक्रिया अबलम्बन गरी परामर्शदाताको छनौट गरी कार्यक्रम सञ्चालन गर्नुपर्ने छ ।
- (झ) सचिवालय तथा इकाईबाट सम्पादन हुने अध्ययन तथा अनुसन्धानका कार्यक्रमहरूको हकमा सार्वजनिक निकाय मार्फत खरिद गरिने परामर्श सेवाको लागि समितिको बैठकबाट प्रचलित कानून बमोजिम सार्वजनिक निकाय छनौट गर्नुपर्नेछ ।
- (ञ) छनौट भएको सार्वजनिक निकायले प्राविधिक तथा आर्थिक प्रस्ताव पेश गर्नु पर्नेछ । पेश भएको प्रस्ताव समितिको पदाधिकारी समेतको उपस्थितिमा छलफल गरी सुझावहरू लिई परिमार्जित संस्करण पेश गर्नु पर्ने र सोही अनुसार कार्यहरू गर्नु पर्नेछ ।
- (ट) समितिको सचिवालय तथा इकाईबाट सम्पादन हुने अध्ययन अनुसन्धान तथा नदी प्रणाली स्तरीय एकिकृत श्रोत व्यवस्थापन योजनाको अन्तिम प्रतिवेदन समितिको बैठकबाट अनुमोदन गर्नुपर्ने छ ।

#### ४.२ विशेषज्ञ नियुक्ती

अध्ययन अनुसन्धान तथा विभिन्न कार्यक्रमहरू कार्यान्वयन गर्ने क्रममा व्यवस्थापन तथा प्रशासकीय कार्यविधि नियमावली २०७१ अनुसार विशेषज्ञ नियुक्ती/छनौट गर्न सकिनेछ ।

#### परिच्छेद-५

#### प्रचार प्रसार सम्बन्धी कार्यक्रम कार्यान्वयन

##### ५.१. प्रचार प्रसार सम्बन्धी कार्यक्रम

५.१.१. प्रचार प्रसारका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्दा निम्न लिखित विषयहरूमा ध्यान दिनुपर्ने छ:-

- (क) वन, वन्यजन्तु, जैविक विविधता र वातावरणको संरक्षण सम्बन्धि जनचेतना अभिवृद्धि गर्न, सफल कार्यक्रमहरूको प्रचार प्रसार गर्न, वन पैदावारमा आत्मनिर्भर बनाउन, उपभोक्ताहरूको जिविकोपार्जनमा थप सहयोग गर्न, संचारजगतको आधुनिकतासंग समन्वय गरी कार्यालयबाट भएका कार्यहरूको सूचना प्रसारणलाई छिटो छरितो बनाउन आवश्यकता अनुसारको विभिन्न किसिमका प्रचार प्रसार सामग्री उत्पादन, वितरण तथा प्रसारण गर्नुपर्ने छ । प्रचार प्रसार सामग्री उत्पादन, वितरण तथा प्रसारण गर्दा सकभर स्थानीय परिवेश तथा भाषालाई प्राथमिकता दिनुपर्ने छ ।
- (ख) कार्यक्रमको सान्दर्भिकतालाई ध्यानमा राखेर जैविक विविधता संरक्षण तथा व्यवस्थापन सम्बन्धि विभिन्न सूचना तथा जानकारीहरू स्थानीय / क्षेत्रिय एफ. एम. तथा रेडियोसंग सम्झौता गरी चेतनामुलक सूचना सम्प्रेषण गर्ने व्यवस्था मिलाउनु पर्नेछ

- (ग) अवलोकन भ्रमण गराउँदा सम्भव भएसम्म नजिककै नमुना स्थलहरूमा भ्रमण गराउनु पर्नेछ । जिल्ला बाहिर अवलोकन भ्रमण गराउनु पर्दा नमुना/सफल रहेका स्थापित कार्यक्रमहरूको भ्रमण गराउनु पर्ने छ । भ्रमण पश्चात् सो सम्बन्धि ज्ञान, सीप र शिक्षाको बारेमा समिक्षा गर्न तथा आदान प्रदान गर्न स्थानीय स्तरमा छलफल गराउनु पर्नेछ ।
- (घ) कार्यक्रम सम्पन्न भए पश्चात् कार्यालयको रेकर्डमा सम्पन्न गरिएको कार्यक्रमहरूको नाम र अन्य तथ्यगत सामग्री तथा विवरण, कार्यक्रमबाट लाभान्वीत जनसंख्या सम्बन्धी विवरण, कार्यक्रमबाट प्राप्त ठोस उपलब्धीहरू, उत्पादन गरिएको प्रचार प्रसार सामग्रीको संख्या, प्रसारण गरिएको भए प्रसारण मिति र साधन, उत्पादित सामग्रीको नमूना आदिको अभिलेखिकरण प्रष्ट भएको हुनुपर्ने छ ।
- (ङ) प्रचार प्रसार कार्यक्रमबाट भएका उपलब्धी तथा विशिष्ट उल्लेख्य नमुना/प्रगति मासिक तथा चौमासिक रूपमा पेश गर्नुपर्नेछ ।
- (च) प्रचार प्रसार र सोही प्रकृतिका अन्य कार्यहरू समेत गर्न सकिनेछ ।

५.१.२ जनशक्ति व्यवस्थापन:

माथिका कार्यक्रमहरू संचालनार्थ समितिको सार्वजनिक संचार सामाजिक परिचालन तथा प्रतिवेदन शाखा जिम्मेवार रहने छ । आवश्यकता अनुसार विज्ञताको आधारमा अन्य शाखा/कर्मचारीको समेत सहयोग लिई कार्य संचालन गरिनेछ ।

५.२ चुरे संरक्षण सम्बन्धि बुलेटिन प्रकाशन (अर्धवार्षिक)

समिति र कार्यान्वयन निकायबाट संचालित चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन संग सम्बन्धित कार्यक्रमहरू, समिति तथा कार्यान्वयन निकायमा हुने तथा गरिने विभिन्न गतिविधिहरू, स्थलगत अनुगमन भ्रमणका गतिविधिहरू, सफल अभ्यासका कार्यहरू, जनचेतनामूलक गतिविधिहरू, समुदाय स्तरमा हुने चुरे संरक्षणका गतिविधिहरू, वातावरण संरक्षणका कार्यहरू, सम्बन्धित समाचारहरू, अध्ययन, अनुसन्धान, विचार, आदीका विविध पक्षहरू र सान्दर्भिक लेख रचनाहरू तयार गरी समितिको बुलेटिनको रूपमा प्रकाशन गर्न यो कार्यक्रम तय गरिएको हो । बुलेटिन प्रकाशनबाट समिति र अन्तर्गत कार्यालय तथा चुरे संरक्षण सम्बन्धि विविध गतिविधिहरूको अभिलेखिकरण हुनेछ साथै राष्ट्रपति चुरे संरक्षण कार्यक्रमको बारे चासो राख्ने स्थानीय जनसमुदाय देखि सरोकारवालाहरूलाई कार्यक्रमबारे जानाकरी प्राप्त गर्न सहज हुनेछ ।

५.२.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

क. बुलेटिनमा प्रकाशित हुने सामग्रीहरूको संकलन गर्नेछ ।

ख. सामग्री संकलन पश्चात सोको सम्पादन गरी प्रकाशन गरिने छ ।

- ग. बुलेटिन अर्धवार्षिक रूपमा प्रकाशन गरिने छ ।  
घ. बुलेटिन प्रकाशन पश्चात् आवश्यकता अनुसार सरोकारवाला निकाय, इच्छुक संस्था/व्यक्तिलाई वितरण गरिने छ ।  
ङ. यसरी प्रकाशनको सिलसिलामा हुने खर्चहरू यसै शिर्षकबाट गर्नुपर्ने छ ।  
च. बुलेटिन तयार गर्नको लागि एक सम्पादक मण्डल गठन गरिने प्रकाशन गरिने बुलेटिनको प्रारूप तयार गराउन सकिनेछ ।

५.३ वार्षिक क्यालेण्डर प्रकाशन तथा वितरण

राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिका कार्यक्रमहरूको प्रचार प्रसार गरी चुरे क्षेत्रमा भएका गतिविधि, फोटो लगायत संकलन गरी वार्षिक क्यालेण्डरमा समावेश गर्ने लक्ष्यका साथ यो कार्यक्रम राखिएको छ । साथै प्रकाशन पश्चात उक्त क्यालेण्डर चुरे क्षेत्रका सरोकारवालाहरू समक्ष वितरण समेत गरिनेछ । सेवा प्रदायक मार्फत आर्थिक ऐन नियम तथा कार्यविधि अनुसार कार्यक्रम संचालन गरिने छ ।

५.४ प्रेस क्लिपिंग संकलन तथा प्रकाशन

राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिको चुरे संरक्षण संबन्धी गुरुयोजनाले मार्गनिर्देशन गरे अनुसार चुरे संबन्धी विभिन्न गतिविधिहरू तथा पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशित समाचार एकमुष्ट संकलन तथा प्रकाशन गरी भविष्यमा दस्तावेजको रूपमा राख्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको छ ।

५.४.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) सेवा प्रदायक (प्रेस काउन्सिल नेपाल) संग संझौता गरी चुरेका विभिन्न विषय (वन, वातावरण, संरक्षण आदि) संग संबन्धित दैनिक, अर्धसाप्ताहिक, साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशित सामग्रीहरू संकलन गरी ईमेल मार्फत दैनिक रूपमा प्राप्त गरिनेछ । साथै प्राप्त जानकारी मूलक सूचनाहरू चुरे संरक्षणको लागि प्रयोग गरिनेछ ।  
(ख) संकलित प्रेस क्लिपिङलाई एकमुष्ट संकलन गरी भविष्यमा प्रयोग गर्न सकिने दस्तावेजका रूपमा समितिमा सुरक्षित राख्ने व्यवस्था गरिनेछ ।

५.५ चुरे संरक्षण सम्बन्धी श्रव्य दृश्य सामग्री तयारी तथा प्रसारण

चुरे संरक्षण संबन्धी सफल अभ्यासका गतिविधिहरूलाई सरोकारवाला (स्थानीय वासिन्दा) समक्ष पु-याई जनचेतना वृद्धि समेत गरी चुरे संरक्षणमा जनताको योगदान वृद्धि गर्ने उद्देश्यका साथ यो कार्यक्रम राखिएको हो ।



५.५.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) यस कार्यक्रम संचालनका लागि कार्यसूची (TOR) निर्माण गरिनेछ ।

(ख) स्वीकृत कार्यसूची अनुसार कानून बमोजिम सेवाप्रदायक छनौट गरी कार्यक्रम संचालन गरिनेछ ।

५.६. चुरे संरक्षण सम्बन्धी जिंगल प्रसारण

चुरे संरक्षण सम्बन्धी विभिन्न सूचनाहरू तयार गरी उपयुक्त संचार माध्यमबाट स्थानीय वासिन्दा समक्ष पु-याई चुरे संरक्षणमा जनताको योगदान वृद्धि गर्ने उद्देश्यका साथ यो कार्यक्रम वार्षिक कार्यक्रममा संचालन गरिएको छ ।

५.६.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) यस कार्यक्रम संचालनका लागि कार्यसूची निर्माण गरिनेछ ।

(ख) स्वीकृत कार्यसूची अनुसार कानून बमोजिम सेवाप्रदायक छनौट गरी कार्यक्रम संचालन गरिनेछ ।

५.७ चुरे संरक्षण सम्बन्धी टेलिभिजन बहस तथा प्रसारण

चुरे संरक्षणमा देखिएका सफल प्रयास र समस्याहरू सरोकारवालासंग प्रतिक्रिया लिई व्यक्तिहरू बीच आपसी छलफल गराई राष्ट्रिय टेलिभिजन मार्फत प्रसारण गराउनु यस कार्यक्रमको मुख्य उद्देश्य रहेकोछ ।

५.७.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) यस कार्यक्रम संचालनका लागि कार्यसूची निर्माण गरिनेछ ।

(ख) स्वीकृत कार्यसूची अनुसार कानून बमोजिम सेवाप्रदायक छनौट गरी कार्यक्रम तयार गरी प्रसारण गरिने छ ।

५.८ चुरे संरक्षण सम्बन्धी ब्रोसर, पर्चा, पम्पलेट, पोस्टर, स्टिकर तयारी तथा वितरण

चुरे क्षेत्रमा संचालित समितिका विभिन्न सफल अभ्यास चुरे क्षेत्रको विशेषता चुरे संरक्षणका स्थानीय प्रविधि जनसरोकारका विविध पक्ष तथा फोटाहरू संलग्न गरी प्रचार सामाग्री तयारी गर्ने तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई मार्फत स्थानीय तहसम्म चुरेका कार्यक्रम तथा संरक्षण उपायहरू प्रचार प्रसार गर्नु यस कार्यक्रमको मुख्य लक्ष्य रहेकोछ । यसरी तयार पारिएको प्रचार प्रसार सामाग्री सरोकारवालालाई वितरण गर्ने छ ।

५.८.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) यस कार्यक्रम संचालनका लागि कार्यसूची निर्माण गरिनेछ ।

(ख) स्वीकृत कार्यसूची अनुसार कानून बमोजिम सेवाप्रदायक छनौट गरी कार्यक्रम संचालन गरिनेछ ।



५.९ चुरे डायरी उत्पादन तथा वितरण

राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिका कार्यक्रमहरूको प्रचार प्रसार गर्ने हेतुले चुरे क्षेत्रमा भएका गतिविधि संकलन गरी डायरीमा समावेश गर्ने लक्ष्यका साथ यो कार्यक्रम राखिएको छ । साथै प्रकाशन पश्चात उक्त डायरी चुरे क्षेत्रका सरोकारवालाहरू समक्ष वितरण समेत गरिनेछ ।

५.९.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

सेवा प्रदायक मार्फत आर्थिक ऐन नियम तथा कार्यविधि अनुसार कार्यक्रम संचालन गरिने

५.१० चुरे संरक्षण सम्बन्धित सन्देशमूलक सामग्री प्रकाशन (विभिन्न पत्रपत्रिकामा)

चुरे क्षेत्रभित्र रहेका सरोकारहरूलाई जनचेतना वृद्धि गर्न विभिन्न सन्देशमूलक सामग्रीहरू तयार गरी पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशन गर्ने यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेको छ ।

५.१०.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) समितिको संबन्धित शाखाको पत्र मार्फत सामग्री उपलब्ध भए पछि मात्र पत्रपत्रिकाले सन्देशमूलक सामग्री प्रकाशन गर्ने ।

(ख) भूक्तानीका लागि प्रकाशित सामग्री सहित निवेदन प्राप्त भएपछि नियमानुसार भूक्तानी गर्ने व्यवस्था गरिने छ ।

५.११ चुरे संरक्षण सम्बन्धि क्रियाकलापहरूको फोटो फ्रेम तयारी तथा वितरण

राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिबाट सञ्चालन भएका चुरे संरक्षण सम्बन्धि उल्लेखनीय क्रियाकलापहरूका बारेमा सरोकारवालाहरूलाई जानकारी गराउनका लागि फोटो फ्रेम तयार गरी वितरण गर्नका लागि यो कार्यक्रम राखिएको छ ।

५.११.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) फोटो फ्रेम तयारीका लागि विषयगत प्राविधिकको सहयोगमा लागत अनुमान तयारी गर्ने ।

(ख) लागत अनुमान तयार भएपछि स्वीकृत बजेटको परिमाण हेरी आवश्यकता अनुसार सार्वजनिक खरिद नियमावली २०६४ बमोजिम परामर्शदाता वा सेवाप्रदायकबाट कार्य संचालन गर्न गराउन सकिनेछ ।

(ग) फोटो फ्रेम तयार गर्दा चित्रकारद्वारा चित्र तयारी, फोटोग्राफरद्वारा फोटो लिई फ्लेक्स प्रिन्ट वा फ्रेम जडित फोटो तयारी गर्न सकिनेछ ।

(घ) यसरी तयार गरिएका फोटो फ्रेमहरू प्रदर्शनीका लागि कार्यालय राखे र सरोकारवालाहरूलाई वितरण गर्ने कार्य गरिनेछ ।

५.१२ चुरे सम्बन्धी वक्तृत्वकला र पुरस्कार

संरक्षणका सिकाईको क्रममा चुरे दिवस वा संरक्षण सम्बन्धी अन्य दिवसको अवसर पारी चुरे क्षेत्रका सरकारी तथा सामुदायिक विद्यालयहरूमा अध्ययनरत विद्यार्थीहरूका विचमा चुरे संरक्षण सम्बन्धी वक्तृत्वकला प्रतियोगिता आयोजना गरी विद्यार्थीहरूमा वन, वन्यजन्तु, जैविक विविधता र वातावरणको संरक्षण सम्बन्धि जनचेनता अभिवृद्धि गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो ।

५.१२.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) वक्तृत्वकला प्रतियोगितामा सहभागी हुने विद्यालय छनौट गरी सो विद्यालयबाट प्रतियोगिता विद्यार्थीहरू छनौट गराउने।
- (ख) वन तथा वातावरण मन्त्रालयबाट स्वीकृत विकास निर्माणको कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा प्रयोग गरिने नर्मस र अर्थ मन्त्रालयबाट स्वीकृत कार्य सञ्चालन निर्देशिका बमोजिम वक्तृत्वकला प्रतियोगिता सम्बन्धी कार्यक्रम तथा लागत अनुमान तयारी गर्ने ।
- (ग) प्रतियोगिता विद्यार्थीहरूलाई पायक पर्ने स्थानमा वातावरण संरक्षण सम्बन्धी कुनै दिवस वा समारोहको अवसरमा वक्तृत्वकला प्रतियोगिता आयोजना गर्ने।
- (घ) विषयगत विज्ञहरूद्वारा वक्तृत्वकला प्रतियोगिताको मूल्याङ्कन गराउने।
- (ङ) मूल्याङ्कनकर्ताहरूको सिफारिस बमोजिम उत्कृष्ट वक्ताहरूलाई पुरस्कार प्रदान गर्ने ।

५.१३ पम्पलेट, पोस्टर, ब्रोशियर, वार्षिक प्रगति पुस्तिका, Activities Profile प्रकाशन, ब्याग खरिद, चुरेको लोगो अंकित ब्याच/कोट पिन, प्रचारप्रसार सामग्री उत्पादन तथा प्रकाशन, वितरण चुरे क्षेत्रमा संचालित समितिका विभिन्न सफल अभ्यास चुरे क्षेत्रको विशेषता चुरे संरक्षणका स्थानीय प्रविधि जनसरोकारका विविध विषय तथा फोटाहरू संलग्न गरी प्रचार सामग्री तयारी गर्ने तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई मार्फत स्थानीय तहसम्म चुरेका कार्यक्रम तथा संरक्षण उपायहरू प्रचार प्रसार गर्नु यस कार्यक्रमको मुख्य लक्ष्य रहेकोछ। यसरी तयार पारिएको प्रचार प्रसार सामग्री सरोकारवालालाई वितरण गर्ने छ ।

५.१३.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) प्रचार प्रसार सामग्री उत्पादन प्रकाशन तथा खरिदका लागि लागत अनुमान तयार गर्ने ।
- (ख) लागत अनुमान तयार भएपछि कामको प्रकृति र स्वीकृत बजेटको परिमाण हेरी आवश्यकता अनुसार सार्वजनिक खरिद नियमावली २०६४ बमोजिम आपूर्तिकर्ता, सेवाप्रदायक, वा अमानतबाट कार्य संचालन गर्न गराउन सकिनेछ ।
- (ग) यसरी तयार पारिएको प्रचार प्रसार सामग्री सरोकारवालालाई वितरण गर्ने।



५.१४ रेडियो मार्फत प्रचार प्रसार

चुरे संरक्षण सम्बन्धी विभिन्न सूचनाहरू स्थानीय भाषामा तयार गरी विभिन्न स्थानीय एफ.एम./रेडियोबाट स्थानीय वासिन्दा समक्ष पु-याई चुरे संरक्षणमा जनताको योगदान वृद्धि गर्ने उद्देश्यका साथ यो कार्यक्रम वार्षिक कार्यक्रममा संचालन गरिएको छ ।

५.१४.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) यस कार्यक्रम संचालनका लागि कार्यसूची निर्माण गरिनेछ ।

(ख) स्वीकृत कार्यसूची अनुसार कानून बमोजिम सेवाप्रदायक छनौट गरी कार्यक्रम संचालन गरिनेछ ।

५.१५ होर्डिङ्ग बोर्ड निर्माण

चुरे क्षेत्रमा संचालित सफल अभ्यासहरू, चुरे क्षेत्रको सिमा तथा चुरे क्षेत्रको विशेषता, चुरे संरक्षणका स्थानीय प्रविधि तथा जनसरोकारका विविध विषयहरू समावेश गरिएको सन्देशमूलक अनुसूचि २ अनुसारको होर्डिङ्ग बोर्ड निर्माण गरी सबैले सहजरूपमा देख्न सक्ने स्थानमा राखी सरोकारवालाहरूलाई चुरे संरक्षण सम्बन्धी जानकारी गराउनका लागि यो कार्यक्रम राखिएको हो ।

५.१५.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) होर्डिङ्ग बोर्ड तयारीका लागि लागत अनुमान तयार गर्ने ।

(ख) लागत अनुमान तयार भएपछि स्वीकृत बजेटको परिमाण हेरी आवश्यकता अनुसार सार्वजनिक खरिद नियमावली २०६४ बमोजिम आपूर्तिकर्ता, सेवाप्रदायक, वा अमानतबाट कार्य संचालन गर्न गराउन सकिनेछ ।

(ग) होर्डिङ्ग बोर्डको साईजको हकमा होर्डिङ्ग बोर्ड राखिने स्थान र प्रकृतिको आधारमा फरकफरक हुन सक्नेछ ।

(घ) यसरी तयार पारिएको चुरे संरक्षण सम्बन्धि सूचनामूलक होर्डिङ्ग बोर्ड सर्वसाधारणले देख्न स्थानमा प्रदर्शन गर्ने ।

परिच्छेद-६

तालिम, गोष्ठी, भ्रमण तथा बैठक सम्बन्धी कार्यक्रम

६.१. तालिम, गोष्ठी, भ्रमण तथा बैठक सम्बन्धी कार्यक्रम

समिति तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरू मार्फत संचालन गरिने विभिन्न कार्यक्रमहरूमा रहेका क्षमता अभिवृद्धि तथा प्रचार प्रसार सम्बन्धित कार्यक्रमहरूमा सामन्जस्यता, एकरूपता तथा आपसी समन्वय कायम राखी लक्ष्य अनुरूपको प्रतिफल हासिल गर्न तथा कार्यक्रम संचालन

प्रक्रियालाई सहज तुल्याउने उद्देश्यले यो कार्यविधि तर्जुमा गरीएको छ । यस कार्यविधि ले सञ्चालन गरिने क्षमता अभिवृद्धि तथा प्रचार प्रसार सम्बन्धित कार्यक्रमहरूको फिल्ड स्तरका सबै कर्मचारीहरूमा समान बुझाई भई प्रभावकारी ढङ्गले कार्यान्वयन गर्न थप सहयोग पुर्याउने विश्वास लिइएको छ । क्षमता अभिवृद्धि तथा प्रचार प्रसार मार्फत संस्थागत विकास गर्न, संस्था/व्यक्ति/समुहमा आइपने चुनौतीहरूलाई सामना गर्न र अवसरलाई उपयोग गरी जीवनस्तरमा सुधार ल्याउन, वन, वन्यजन्तु, वातावरण र जैविक विविधता संरक्षण सम्बन्धि जनचेतना अभिवृद्धि गर्न, सफल कार्यक्रमहरूको प्रचार प्रसार गर्न, वन पैदावारमा आत्मनिर्भर बनाउनका साथै उपभोक्ताहरूको जिविकोपार्जनमा थप सहयोग गर्न, क्षमता अभिवृद्धि तथा प्रचार प्रसारका कार्यक्रमलाई प्रभावकारी रूपमा संचालन गर्न आवश्यक रहेको छ ।

६.१.१ संचालन गरिने कार्यक्रमहरू :

- (क) कर्मचारी सिप विकास तालिम (GPS/GIS/AutoCAD)
- (ख) कर्मचारी क्षमता अभिवृद्धि तालिम
- (ग) कर्मचारीहरूका लागि (GPS/GIS, drawing design and estimate) तालिम
- (घ) कर्मचारी दक्षता वृद्धि तालिम
- (ङ) चुरेसम्बन्धी नदी प्रणाली स्तरीय अभिमुखीकरण
- (च) चुरे संरक्षणसम्बन्धी अभिमुखीकरण
- (छ) योजना तर्जुमा तथा समिक्षा गोष्ठी
- (ज) क्लस्टर स्तरीय समन्वय, प्रगति समिक्षा गोष्ठी
- (झ) प्रदेश स्तरीय समन्वय गोष्ठी
- (ञ) केन्द्रस्तरीय समन्वय गोष्ठी
- (ट) क्लस्टर स्तरीय समन्वय, प्रगति समिक्षा गोष्ठी
- (ठ) केन्द्र स्तरीय प्रगति समिक्षा गोष्ठी
- (ड) वार्षिक योजना तर्जुमा गोष्ठी

६.१.२ ध्यान दिनुपर्ने विषयहरू:

- (क) तालिम संचालन गर्नका लागि सम्बन्धित कार्यालयले स्वीकृत कार्यक्रममा तोकेको विषयमा ज्ञान सीप भएको र सहजीकरण गर्न सक्ने स्थानीय स्रोत व्यक्तिको रोष्टर तयार गर्नुपर्ने छ । यस्ता स्रोत व्यक्तिहरूमा सो विषयसँग सम्बन्धित कार्यालयका कर्मचारीका अतिरिक्त कृषक,

३४

र अन्य सरोकारवाला सरकारी / गैहसरकारी निकायमा कार्यरत कर्मचारीहरू पनि हुन सक्नेछन् ।

- (ख) सबै किसिमका तालिम/गोष्ठी/अन्तरक्रिया/अभिमुखीकरण गर्दा वन तथा वातावरण मन्त्रालयबाट स्वीकृत विकास निर्माणको कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा प्रयोग गरिने नर्मस र अर्थ मन्त्रालयबाट स्वीकृत कार्य सञ्चालन निर्देशिका बमोजिम गनुपर्नेछ । उक्त नर्मस बमोजिम सम्बन्धित तालिम, गोष्ठिको लागत अनुमान तयार गरी स्वीकृत पश्चात् सञ्चालन गर्नुपर्ने छ ।
- (ग) सम्बन्धित तालिम, गोष्ठिको सञ्चालन गर्नु पूर्व सेसन योजना बनाउनुपर्ने छ । साथै सो सेसन योजना कार्यालय प्रमुखबाट स्वीकृत गराउनु पर्ने छ ।
- (घ) कर्मचारीको क्षमता अभिवृद्धि गर्ने कार्यक्रमको लागि कर्मचारी छनौट गर्दा सम्बन्धित विषयमा चासो राख्ने, सो कार्यक्रममा सहभागी भए पश्चात् आफुले सिकेको ज्ञान, सिप अरुलाई दिन सक्ने कर्मचारीलाई प्राथमिकता दिनुपर्ने छ ।
- (ङ) क्षमता अभिवृद्धिका लागि समुहमा सहभागी छनौट गर्दा समुहको काममा सक्रिय रूपले लाग्ने, समुहका सदस्यहरूलाई सहयोग गर्ने, तोकिएको कार्यक्रममा सहभागी भएर आए पश्चात् सिकेको ज्ञान, सिप अरुलाई आदानप्रदान र प्रसारण गर्न सक्ने, साथै सो को उपयोग गरी स्वयं र समुहलाई फाइदा पुर्याउने किसिमका सदस्यलाई प्राथमिकता दिनुपर्नेछ ।
- (च) क्षमता अभिवृद्धिका कार्यक्रम सम्भव भएसम्म स्थलगत रूपमा नै सञ्चालन गर्नुपर्नेछ ।
- (छ) क्षमता अभिवृद्धिका कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा लैङ्गिक तथा सामाजिक समावेशीकरणको सम्बेदनशीलतालाई ध्यान दिई सकेसम्म ५० प्रतिशत महिला तथा विपन्न वर्गको सहभागिता सुनिश्चितता गराउनु पर्ने छ ।
- (ज) क्षमता अभिवृद्धि हुने किसिमका कार्यक्रम मुख्यतया समुहमा सञ्चालन गर्नुपर्ने हुदा एक पटकमा प्रत्येक समुहमा कम्तीमा १० जना भन्दा बढि सहभागीहरू समावेश भएको हुनुपर्ने छ । स्वीकृत बजेट र प्रचलित नियमको परिधिभित्र रही सहभागीहरूलाई तोकिएको नर्मस अनुसारको भत्ता तथा अन्य सुविधा उपलब्ध गराउन सकिनेछ । प्रशिक्षकलाई तालिम नर्मसको आधारमा प्रशिक्षण भत्ता उपलब्ध गराउन सकिनेछ । (झ)कार्यक्रमलाई थप प्रभावकारी बनाउन प्राप्त श्रोत साधन, सहभागीहरूको स्तर साथै आवश्यकतालाई मध्यनजर गरी विभिन्न किसिमका सिकाईका माध्यमहरू अपनाउन सकिन्छ । सो को लागि आवश्यकतानुसार विषयसँग सम्बन्धित प्रचार प्रसारका सामग्रीहरू तयारी, संकलन तथा खरीद गर्न सकिने छ वा कुनै तयारी सामग्रीहरू वितरण गर्नुपर्ने भएमा सो समेत गर्न सकिने छ । कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा सहभागिले बुझ्ने भाषा प्रयोग गर्नुपर्ने छ ।

of

३५

Shrestha

१३.१



राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

- (ज) यस्ता कार्यक्रमको अन्तमा सञ्चालन गरीएको कार्यक्रमका सहभागीहरूबाट पृष्ठपोषण लिनुपर्ने छ। जसले गर्दा आगामी वर्षको कार्यक्रम सञ्चालनमा थप सहयोग पुग्ने छ। यसका लागि पूर्व निर्धारित फारामहरू तथा मुल्याङ्कन ढाँचाहरू प्रयोग गर्न सकिने छ।
- (ट) कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि हरेक तालिम गोष्ठीको विस्तृत विवरणहरू जस्तै: स्थान, सहभागीको संख्या, कार्यक्रमको प्रभावकारीता आदि बारे पृष्ठपोषण समेत उल्लेख भएको प्रतिवेदन तयार गरी सम्बन्धित कार्यालयमा राख्नुपर्ने छ। सञ्चालन भएको तालिमको प्रतिवेदन तथा मुख्य उपलब्धी समितिमा पेश गरिने प्रगतीमा उल्लेख गर्नु पर्नेछ।
- (ठ) क्षमता अभिवृद्धिका कार्यक्रम सञ्चालन पश्चात् तोकिए बमोजिमको सार्वजनिक सुनुवाई समेत गर्नुपर्ने छ।
- (ड) यसका साथसाथै वर्षभरी सञ्चालन गरेको क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रमबाट लाभान्वित दलित, जनजाती, विपन्न, महिला, पुरुष सहभागीको संख्या, सञ्चालन गरेको कार्यक्रमको नाम उल्लेख हुने अभिलेख तयार गरी वार्षिक प्रगतीमा समावेश गरी पठाउनु पर्नेछ। समितिबाट समन्वयका लागि कार्यशाला गोष्ठी तथा बैठक आयोजना गरी सञ्चालित कार्यक्रम सम्बन्धमा छलफल/अन्तरक्रिया संचालन गरिनेछ।

६.१.३ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) समितिलाई दिशानिर्देश गर्न तथा कार्यक्रमलाई प्रभावकारी रूपले संचालन गर्न आवश्यक पर्ने विषयवस्तुको पहिचान समितिले गर्ने छ।
- (ख) विषयवस्तुसंग सम्बन्धित कार्यान्वयन निकायले बैठकको प्रस्ताव तयार गरि बैठकको लागि आवश्यक पर्ने पत्राचार गर्नु पर्नेछ तथा बैठकको आयोजना गर्नु पर्नेछ।
- (ग) कार्यान्वयन निकायका आवश्यक कर्मचारीहरूलाई परिचालित गरि कार्यक्रम संचालनको गरिनेछ।

६.२ केन्द्र स्तरीय समन्वय बैठक

६.२.१ कार्यक्रम परिचय:

सातै प्रदेशहरू अन्तर्गतका ३७ जिल्लाहरूमा ५ वटा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरू नेपाली सेनाको वन तथा पर्यावरण सुरक्षा निर्देशनालय र समिति आफैले सञ्चालन गर्ने राष्ट्रपति चुरे संरक्षण कार्यक्रम अन्तर्गतका क्रियाकलापहरूलाई केन्द्रीय तहबाट समन्वय गरी अपेक्षित प्रतिफल हासिल गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो। कार्यक्रम कार्यान्वयन निकायहरूका केन्द्रीय स्तरका निकायहरू र राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिका सरोकारवाला र साझेदारहरू विच केन्द्रस्तरमै समन्वय गरी स्वीकृत कार्यक्रम कार्यान्वयनमा सहजता प्रदान गर्ने।

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३



६.२.२ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) कार्यक्रमलाई प्रभावकारी रूपले संचालन गर्न केन्द्र स्तरबाट समन्वय गर्नु पर्ने विषय वस्तु तथा निकायहरूको पहिचान गर्ने।
- (ख) विषयवस्तु संग सम्बन्धित शाखाले बैठकको प्रस्ताव तयार गरि बैठकको लागि आवश्यक तयारी तथा पत्राचार गरी बैठकको आयोजना गर्ने।
- (ग) बैठकबाट पारित निर्णय तथा प्राप्त सुझावहरू कार्यान्वयन का लागि सहज व्यवस्था मिलाउने।

६.२.३ जनशक्ति तथा बजेट व्यवस्थापन:

यो कार्यक्रम संचालन गर्न समितिको बैठकको निर्णयानुसार सम्बन्धित शाखाका कर्मचारीहरू परिचालित हुनेछन्।

६.२.४ अपेक्षित उपलब्धि:

कार्यक्रम कार्यान्वयन निकायहरू, केन्द्रीय स्तरका निकायहरू र राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समितिका सरोकारवाला र साझेदारहरू विच केन्द्रस्तरमै समन्वय गरी स्वीकृत कार्यक्रम कार्यान्वयनमा सहजता प्रदान हुने।

६.३ प्रदेशस्तरीय समन्वय समितिका बैठक

चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना २०७४ को मार्गदर्शन र प्रदेश समन्वय समितिको गठन तथा संचालन कार्यविधि २०७८ बमोजिम चालु आ.व. मा एकपटक बैठक (पहिलो त्रैमासिक) आयोजना गरी कार्यक्रम कार्यान्वयनको अवस्था, प्रभाव कार्यान्वयनका क्रममा देखापरेका समस्याको विश्लेषण गर्न प्रदेश अन्तर्गतका सम्बन्धित सरोकारवालाहरू विच छलफल हुने।

६.३.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) कार्यक्रमलाई प्रभावकारी रूपले संचालन गर्न प्रदेश स्तरबाट समन्वय गर्नु पर्ने विषय वस्तु तथा निकायहरूको पहिचान गर्ने।
- (ख) सम्बन्धित इकाईले बैठकको प्रस्ताव तयार गरि बैठकको लागि आवश्यक तयारी तथा पत्राचार गरी बैठकको आयोजना गर्ने।
- (ग) बैठकबाट पारित निर्णय तथा प्राप्त सुझावहरू कार्यान्वयनका लागि सहज व्यवस्था मिलाउने।

६.३.२ जनशक्ति तथा बजेट व्यवस्थापन:

यो कार्यक्रम संचालन गर्न सम्बन्धित समितिका सदस्यको नेतृत्वमा इकाई कार्यालयका प्रमुख र कर्मचारी परिचालित हुनेछन्। यो कार्यक्रम अन्तर्गत कम्तिमा एउटा बैठक संचालन गर्नेगरी इकाई कार्यालयहरूलाई बजेट विनियोजन गरिएको छ।

६.४ क्लस्टर स्तरीय समन्वय, प्रगती समिक्षा गोष्ठी

राष्ट्रपति चुरे-तराई-मधेश संरक्षण विकास समिति अन्तर्गत रहेको कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईहरूबाट (५ वटै) गत आ.व.मा संचालित कार्यक्रमहरूको प्रगति समिक्षा गरी चालु आ.व. को कार्यक्रमहरूलाई प्रभावकारी रूपमा संचालन त्रैमासिक रूपमा गरिनेछ ।

६.४.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) कार्यक्रम संचालन गर्दा कार्यक्रम संचालनमा संलग्न सबै निकाय तथा सरोकार वालालाई सहभागी गराउनु पर्ने छ ।
- (ख) कार्यान्वयन निकायका आवश्यक कर्मचारीहरूलाई परिचालित गरि कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई मार्फत यो कार्यक्रम संचालन गरिनेछ ।
- (ग) यस क्रियाकलापलाई सहजीकरण तथा समन्वय गर्न आवश्यक भएमा समितिको नीति तथा योजना शाखाले समन्वयको भूमिका खेल्ने छ ।


६.५ केन्द्र स्तरीय प्रगति समिक्षा गोष्ठी

कार्य कार्यक्रम कार्यान्वयन निकायबाट सम्पन्न भए गरेका आर्थिक एवं भौतिक गतिविधिहरूका प्रगती विवरण, सम्पादनको क्रममा अभ्यास गरिएका असल सिकाइहरू एवं आइपरेको समस्या तथा समस्या समाधानका लागि गरिएका प्रयासहरू समेतका विवरणहरूका सम्बन्धमा समय समयमा समीक्षा गरी पृष्ठपोषण प्राप्त गर्न र उक्त पृष्ठपोषणको आधारमा संस्थागत सुधारका उपायहरू पहिचान गर्न समिक्षा गोष्ठिको आयोजना गर्ने गरिनेछ। समितिका पदाधिकारीहरू, कार्यान्वयन निकायका प्रमुखहरू तथा योजना हेर्ने कर्मचारीहरू समितिका रा.प.द्वि., रा.प.तृतीय र रा.प.अनं. प्रथम श्रेणीका कर्मचारीहरू, वन तथा वातावरण मन्त्रालय, अर्थ मन्त्रालय र योजना अयोगका प्रतिनिधिहरू र अन्य सरोकारवालाहरू समेतको सहभागितामा केन्द्र स्तरीय प्रगति समिक्षा गोष्ठी सञ्चालन गरिने छ। निम्न उद्देश्यहरू प्राप्तिका लागि केन्द्र स्तरीय प्रगति समिक्षा गोष्ठी सञ्चालन गरिनेछ।

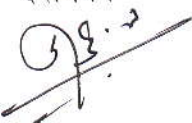
- (क) समीक्षा अवधिमा भए गरेका आर्थिक तथा भौतिक प्रगती र कार्यक्रमका सबल तथा दुर्बल पक्षहरूको मलटार ललितपुर पहिचान गरी आगामी दिनको लागि पृष्ठपोषण तथा मार्ग दर्शनको रूपमा लिने ।
- (ख) सम्पादित कार्यक्रमहरू चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना २०७४ अनुरूप रहे नरहेको पहिचान गरी आगामी दिनमा सञ्चालन गरिने कार्यक्रमहरूलाई मार्गदर्शन दिने ।
- (ग) असल सिकाइहरूको पहिचान गरी अनुकरणीय कार्यहरूको अनुसरण तथा मार्ग दर्शनको रूपमा आगामी दिनमा अनुसरण गर्ने ।



३८









राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोगको कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

(घ) कार्यक्रमहरूलाई पारदर्शी तथा जनउत्तरदायि बनाउने ।

(ङ) कार्यक्रम कार्यान्वयनमा देखा परेका समस्याहरू र चुनौतीहरू समाधानको खोजि गर्ने ।

६.६ वार्षिक योजना तर्जुमा गोष्ठी

प्रत्येक वर्ष कार्यालयबाट गरिने कृयाकलापको छलफल गराउनु पर्दछ । यस योजना तर्जुमा कार्यमा सम्पुण कार्यालयका प्रमुखहरूको अनिवार्य सहभागिता गराउनु पर्दछ । कार्यक्रमको सान्दर्भिकता हेरी अन्य निकाय र विषयसँग सम्बन्धित प्रतिनिधी वा सरोकारवाला व्यक्तिलाई समेत समावेश गर्न सकिने छ । यस गोष्ठीको मुख्य कार्य आगामी वर्षको लागि योजना तयार गरी माथिल्लो निकायमा पेश गर्नुपर्दछ ।

(क) आ-आफ्नो कार्यालयबाट संचालन हुने कार्यक्रमको योजना तयार गर्ने र पारित गराउने ।

(ख) अन्य निकायसंग सहकार्य गर्न सकिने कार्यक्रमहरूको पहल गर्ने ।

परिच्छेद- ७

अन्य कार्यक्रमहरू

७.१ चुरे दिवस केन्द्र स्तर/इकाई स्तर

(क) प्रत्येक वर्ष आषाढ २ गतेलाई चुरे दिवसको रूपमा समिति र ५ वटै कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईमा छुट्टाछुट्टै मनाई चुरे संरक्षणको महत्वलाई सबै तहमा पुर्याउन यो कार्यक्रम संचालन गरिने छ ।

(ख) यस कार्यक्रम अन्तर्गत प्रचार प्रसार गोष्ठी, वृक्षरोपण, रुख विरुवा, फलफुल विरुवा समेत वितरण लगायत अन्य प्रचार प्रसार कार्य गरी चुरे संरक्षणमा जनचेतना बढाईने छ ।

(ग) यस कार्यक्रमको लागि समितिको सुझाव र सल्लाहमा प्रत्येक कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईले आ-आफ्नो प्रदेशको प्रतिनिधित्व हुनेगरी आवश्यकता अनुसारका कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्नेछ ।

७.२ चुरे संरक्षण तथा व्यवस्थापनसंग सम्बन्धित शोधपत्रको निम्ति सहयोग

चुरे तराई-मधेश संरक्षणमा उपयोगी हुन सक्ने शोधपत्र तथा शैक्षिक अनुसन्धानका लागि यो कार्यक्रम राखिएको छ । यो कार्यक्रम समितिले स्वीकृत गरेको "शोधपत्र अनुसन्धान सहयोग उपलब्ध गराउने सम्बन्धी कार्यविधि, २०७४" बमोजिम संचालन हुनेछ ।

७.२.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) समितिको स्वीकृत कार्यक्रमको परिधि तथा "शोधपत्र अनुसन्धान सहयोग उपलब्ध गराउने सम्बन्धी कार्यविधि, २०७४" बमोजिम सूचना प्रकाशन गर्ने ।

- (ख) प्रकाशित सूचना बमोजिम पर्न आएका निवेदन उपर कार्यवाही गर्न शिफारिस समिति गठन गर्ने ।
- (ग) शिफारिस समितिको गठन समितिको बोर्ड सदस्यको नेतृत्वमा समितिले गर्नेछ ।
- (घ) शिफारिस समितिले शिफारिस गरेको सोधपत्रकर्ता हरूको नामावली समितिको वेब साइटमा प्रकाशन गर्ने छ ।
- (ङ) अन्य व्यस्था समितिले स्वीकृत गरेको "शोधपत्र अनुसन्धान सहयोग उपलब्ध गराउने सम्बन्धी कार्यविधि, २०७४" बमोजिम हुनेछ ।

### ७.३ वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन तयारी तथा प्रकाशन

#### ७.३.१ कार्यक्रम परिचय:

कार्यालयहरूले विभिन्न स्विकृत वार्षिक कार्यक्रमहरू संचालन गरेका छन । यस बाहेक वन सम्बन्धी अन्य कार्यहरू समेत सम्पादन गरिरहेका छन । यी सबै कार्यलाई अभिलेखीकरण गर्न यो क्रियाकलाप संचालन गरिने छ । तथ्यांक संकलन, विश्लेषण, मसलन्द, छलफल, छपाई आदिमा यो रकम खर्च गर्न सकिनेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न विषयहरू समावेश गर्नुपर्नेछ ।

(क) प्रकाशित सामग्रीको संख्या

(ख) प्रकाशित सामग्रीको डिपिटल कपि समेत

### ७.४ नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तयारी तथा प्रकाशन

राष्ट्रपति चुरे-तराई संरक्षण कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि आवश्यक नयाँ तथा मौजुदा नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तथा कार्यविधिहरू निर्माण, संशोधन तथा परिमार्जन गर्ने कार्यका लागि यो कार्यक्रम राखिएको छ । समितिको आवश्यकता र औचित्य हेरी उपरोक्तानुसारका नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तथा कार्यविधिहरू तयारी तथा प्रकाशन गरिनेछ ।

#### ७.४.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

(क) निर्माण, संशोधन तथा परिमार्जन गर्नुपर्ने नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तथा कार्यविधिहरूको सूची तयारी गर्ने ।

(ख) नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तथा कार्यविधिहरू तयारी, संशोधन तथा परिमार्जनका लागि कार्यदल गठन गर्ने ।

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

- (ग) गठित कार्यदलद्वारा आवश्यकता अनुसार विज्ञहरूसङ्ग राय परामर्श गरी बैठक तथा छलफल कार्यक्रम मार्फत दिइएका नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तथा कार्यविधिहरूको मस्यौदा तयारी गर्ने ।
- (घ) कार्यदलद्वारा प्रस्ताव गरिएका नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तथा कार्यविधिहरू समितिको बैठकमा पेश गरी पारित गराउने ।
- (ङ) समितिबाट स्वीकृत नीति, नियम, कार्यनीति, मार्गदर्शन, निर्देशिका तथा कार्यविधिहरू प्रकाशन गर्ने ।

७.५ विगतका कार्यक्रमहरूको अभिलेखीकरण/प्रभाव मूल्यांकन

मिति २०७१/०३/०२ मा राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समिति गठन भए पश्चात् आ.व. २०७१/०७२ देखि आ.व. २०७४/०७५ सम्म चुरे तथा तराई मधेश क्षेत्रको संरक्षण तथा व्यवस्थापनका विविध कार्यक्रमहरू तय गरि जिल्लाका तत्कालिन कार्यालयहरू जिल्ला वन कार्यालय, जिल्ला भू-संरक्षण कार्यालय, जिल्ला कृषि विकास कार्यालय, जिल्ला पशु सेवा कार्यालय, जल उत्पन्न प्रकोप व्यवस्थापन डिभिजन कार्यालय, नेपालि सेना क्षेत्रीय वन निर्देशनालय, साझेदार गैह्रसरकारी संस्थाहरू मार्फत कार्यान्वयन भएको थियो। आ.व. २०७५/०७६ मा स्थानीय तहहरू मार्फत कार्यक्रम कार्यान्वयन भयो । आ.व. २०७६/०७७ देखि समिति अन्तर्गत नै कार्यान्वयन इकाई स्थापना गरी कार्यक्रम कार्यान्वयन भैरहेको छ । यसरी पहिलो पांच वर्षमा अन्य निकायहरू मार्फत कार्यक्रम कार्यान्वयन भएकोले सो समयको साथसाथै त्यस पश्चात कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईले समेत गरेको र समिति कार्यालयबाट समेत कार्यान्वयन भएका कार्यक्रमहरूको के कस्तो प्रभावकारिता तथा नतिजा रहयो भन्ने विश्लेषणमा सहयोग पुग्ने भएकोले कार्यक्रमहरूको अभिलेखीकरण गरी व्यवस्थित गर्न यो कार्यक्रम तय गरिएको हो । यस कार्यक्रम अन्तर्गत तथ्यांक संकलन, तथ्यांक विश्लेषण तथा अभिलेख व्यवस्थापन सम्बन्धमा आवश्यक कार्यहरू गर्दा लाग्ने खर्च लेखन सकिनेछ ।

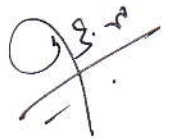
७.५.१ कार्यक्रम संचालन प्रक्रिया:

- (क) विगतमा कार्यक्रम कार्यान्वयन गरेका निकायहरू, समिति कार्यालय, स्थानीय उपभोक्ता समूहबाट कार्यक्रमहरूको कागजात तथा तथ्यांक संकलन गर्ने ।
- (ख) प्राप्त कागजात र तथ्यांकहरूको कार्यक्रम अनुसार वर्गीकरण गर्ने ।
- (ग) अभिलेखीकरण गरी व्यवस्थित गर्ने ।











७.५.२. जनशक्ति:

यो कार्यक्रम संचालनका लागि सचिवालय तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईका कर्मचारीहरू र वन तथा वातावरण मन्त्रालयबाट प्राप्त या समितिका इन्टरनहरू परिचालित हुनेछन् साथै आवश्यकता अनुसार व्यक्ति वा सेवा प्रदायक छनोट गरि परिचालन गर्न सकिनेछ ।

७.६ नदी प्रणालीहरूको एटलस तयारी

चुरे संरक्षण क्षेत्र भित्र पर्ने स्थानीय तह, जिल्ला, प्रदेश अनुसार र जनसंख्याको नयाँ तथ्यांक अनुसार एटलस तयार गरी छपाई गर्ने कार्य गत आ.व. मै सम्पन्न भएको छ । यस कार्यक्रम अन्तर्गत चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना २०७४ ले पहिचान गरेका १६४ नदी प्रणालीहरूको एटलस तयार गरी छपाई गर्ने कार्य गरिने छ ।

७.६.१ कार्य संचालन प्रक्रिया:

- (क) एटलस तयारी तथा छपाई गर्न विद्यमान ऐन नियम बमोजिम सेवाप्रदायक छनौट गरिनेछ ।
- (ख) तयार गरिएको एटलस सामग्री सेवा प्रदायकबाट छपाई गरी प्रकाशन गरिनेछ ।

७.७ नदी प्रणालीहरूको पुनरावलोकन (नक्सांकन तथा प्रकाशन)

यस कार्यक्रम अन्तर्गत चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना २०७४ ले १६४ नदी प्रणालीहरू निर्धारण गरेको थियो। उक्त नदी प्रणालीहरूको पुनरावलोकन गर्न आवश्यक देखिएकोले नदी प्रणालीहरूको पुनरावलोकन गरी नक्सांकन तयार गरी प्रकाशन गरिने छ ।

७.७.१ कार्य संचालन प्रक्रिया:

- (क) नदी प्रणालीहरूको पुनरावलोकन (नक्सांकन तथा प्रकाशन) गर्न विद्यमान ऐन नियम बमोजिम सेवाप्रदायक छनौट गरिनेछ ।
- (ख) तयार गरिएको सामग्री सेवा प्रदायकबाट छपाई गरी प्रकाशन गरिनेछ ।

७.८ नदी प्रणाली स्तरीय एकीकृत स्रोत व्यवस्थापन (पन्च वर्षीय) योजना तर्जुमा कार्यक्रम

७.८.१ परिचय

चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना २०७४ ले चुरे भू-परिधिबाट बग्ने मेचीदेखि महाकालीसम्मका सबै नदीहरूलाई १६४ वटा नदी प्रणालीमा विभाजन गरी सो मध्यका ६४ नदी प्रणालीहरू पहिलो पाँचवर्षमा व्यवस्थापन गर्ने लक्ष्य तोकिएको देखिन्छ। सोहि अनुरूप आ.व. २०७९/८० सम्ममा ६२ वटा नदी प्रणालीहरूको एकीकृत नदीप्रणाली स्रोत व्यवस्थापन योजना तयार गर्ने कार्य सम्पन्न भैसकेको छ । हाल चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापन गुरुयोजना समेत परिमार्जन भएकोले उक्त परिमार्जित गुरु योजनाले

निर्दिष्ट गरेका लक्ष्य हासिल गर्न हरेक नदी प्रणालीहरूको एकीकृत व्यवस्थापन योजना तयार गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो ।

७.८.२ कार्यक्रम संचालन प्रकृया:

- (क) नदीप्रणाली एकीकृत स्रोत व्यवस्थापन योजना तयार गर्न बाँकी रहेका, चुरे तराई मधेश संरक्षण तथा व्यवस्थापनको गुरुयोजनाले प्राथमिकतामा राखेका र कार्यक्रम कार्यान्वयन भैराखेका तर योजना तयार नभएका नदी प्रणालीहरूको सुची तयार गरि समितिको बैठकबाट छनौट गरिनेछ ।
- (ख) स्वीकृत कार्यक्रम अनुसार तय गरिएका नदीप्रणालीहरूको एकीकृत प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापनको अवधारणा अनुरूप नदी प्रणाली स्तरीय एकीकृत योजना तयार गरिनेछ ।
- (ग) यस समितिको नदी प्रणाली एकीकृत स्रोत व्यवस्थापन योजना निर्माण निर्देशिका, २०७४ लाई मुख्य आधार मानी योजना तयार गरिनेछ ।
- (घ) योजना तयार गर्नु पर्ने नदी प्रणालीहरू समेटी कार्यसूची (TOR) तयार गरिनेछ ।
- (ङ) कार्यसूची स्वीकृत भएपछि कामको प्रकृति र स्वीकृत बजेटको परिमाण हेरी आवश्यकता अनुसार सार्वजनिक खरिद ऐन, २०६३ तथा सार्वजनिक खरिद नियमावली २०६४ बमोजिम सार्वजनिक निकाय, परामर्शदाता वा अमानतबाट कार्य संचालन गर्न गराउन सकिनेछ ।
- (च) नदी प्रणाली स्तरीय एकीकृत स्रोत व्यवस्थापन योजना तयार गर्ने क्रममा गरिने स्थलगत अध्ययन, तथा कार्यक्रम छनौट गर्दा प्रत्येक नदी प्रणालीका सरोकारवाला निकायहरूको सहभागिता सुनिश्चित गर्नुपर्नेछ ।
- (छ) तथ्यांक संकलन गर्दा खोलाका दायाँबायाँका समस्याहरूमा मात्र सिमित नभई सो नदी प्रणालीको समग्र जलाधार क्षेत्रभित्रका क्रियाकलापहरूलाई समेत समेटिने गरी तथ्यांक संकलन गर्नु पर्नेछ ।

७.९ चुरे संरक्षणका मापदण्ड कार्यविधि सम्बन्धी अभिमुखीकरण कार्यक्रम

७.९.१ परिचय:

चुरे संरक्षण क्षेत्र नेपालको पूर्व मेचीदेखि पश्चिम महाकालीसम्म देशको सातै प्रदेश अन्तरगत ३७ जिल्ला र १३९ स्थानिय तहमा फैलिएर रहेको छ । चुरे संरक्षण कार्य भन्नाले यस क्षेत्रमा रहेका प्रकृतिक संपदाको संरक्षण जैविक विविधताको संरक्षण गर्दै यस भेगमा रहेका पारिस्थितिकिय प्रणालीको संरक्षण हो । तसर्थ चुरे संरक्षण कार्य कुनै एक विषयगत कार्यालय, कार्यक्रम र क्षेत्रको आवद्धताले मात्र सम्भव नभई बहुसरोकारको विषय भएको हुँदा नेपाल

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

सरकारले जारी गरेका विभिन्न मापदण्ड तथा कार्यविधि एवं त्यसैको आधारमा यस समितिबाट जारी विभिन्न कार्यविधिहरूको सफल कार्यान्वयन नै चुरे संरक्षणका आधारशिला हो ।

७.९.२ उद्देश्यः

चुरे संरक्षणका लागि नेपाल सरकारद्वारा जारी ऐन, नियम, मापदण्ड एवं यस समितिबाट जारी कार्यविधि तथा मापदण्डहरू सम्बन्धमा सरोकारवालालाई जानकारी गराई संरक्षण कार्य प्रभावकारी बनाउने ।

७.९.३ लक्षित समूहः

ऐन, नियम, मापदण्ड तथा कार्यविधि कार्यान्वयनसँग सम्बन्धीत प्रदेश तथा स्थानीय स्तरका जनप्रतिनिधि, कार्यालय तथा अन्य संघ संस्थाहरू, जिल्ला समितिका अनुगमन प्रमुख तथा पदाधिकारीहरू, स्थानिय उपभोक्ताहरू चुरेक्षेत्रमा कार्यक्रम संचालन गर्ने निकायहरू, सामुदायिक समुहहरू, चुरे संरक्षण कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि कार्यान्वयन निकाय तथा स्थानीय तहबाट गठित उपभोक्ता समुहहरू यस कार्यक्रमका लक्षित समूह हुनेछन् । समिति केन्द्र र कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई बीच समन्वयमा लक्षित समूह तय गरी कार्यक्रम संचालन गरिनेछ ।

७.१० वातावरणीय अध्ययनको लागि प्रस्तावित क्षेत्र/आयोजनाको अनुगमन

७.१०.१ परिचयः

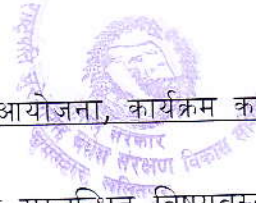
वातावरण र विकासका सिद्धान्तहरूलाई एक आपसमा मैत्रीपूर्ण बनाउन चुरे क्षेत्रमा हुने विकास निर्माणका कार्यहरूलाई व्यवस्थित र दिगो बनाउन, आयोजनाहरू तर्जुमा तथा कार्यान्वयन गर्दा वातावरणीय अध्ययन कार्यलाई विशेष ध्यान दिइएको छ । यी कार्यहरूमा चुरे क्षेत्रभरी एकरूपता कायम गरी सरल रूपमा आयोजना तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्दा, उद्योग स्थापना गर्दा उत्पन्न हुने वातावरण सम्बन्धि दुविधा तथा समस्या पहिचान गरी निराकरणमा सहयोग पुर्याउन र विकास निर्माणको कार्य संचालन गर्दा वातावरण मैत्री प्रविधि अपनाउन वातावरण संरक्षण ऐन २०७६, वातावरण संरक्षण नियमावली २०७७, नेपाल सरकार (मन्त्रिपरिषद) को मिति २०७७/०४/०५ को बैठकबाट हुंगा, गिटी, बालुवा उत्खनन, विक्रि तथा व्यवस्थापन सम्बन्धि मापदण्ड २०७७ जारी गरेको र सो कानून र जारी गरेको मापदण्डले व्यवस्था गरेको प्रावधानलाई समेत सम्बोधन हुने गरी राष्ट्रपति चुरे- तराई मधेश संरक्षण विकास समिति गठन आदेश, २०७१ को दफा २० ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी यस समितिले "चुरे क्षेत्रमा विकास निर्माण गर्दा अवलम्बन गर्नुपर्ने कार्यविधि तथा मापदण्ड २०७७" बनाई लागू गरेकोछ । "चुरे क्षेत्रमा विकास निर्माण गर्दा अवलम्बन गर्नुपर्ने











कार्यविधि तथा मापदण्ड, २०७७" संग सम्बन्धित विषयवस्तुहरू यस कार्यक्रमका क्षेत्रहरू हुनेछन् ।

७.१०.२ कार्यक्रमको उद्देश्य:

नदीजन्य चुरे संरक्षण क्षेत्रमा विकास निर्माण, भौतिक पूर्वाधार विकासका कार्यक्रमहरू, उद्योग स्थापना र संचालन, पदार्थको व्यवस्थापन आदी गर्ने विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी संघ संस्थाहरू, निर्माण व्यवसायी, प्रदेश तथा स्थानीय स्तरका संघ संस्थाहरूले यस कार्यविधि तथा मापदण्डलाई अनिवार्य रूपमा पालना गर्नु गराउनु पर्नेछ । सो पालनामा सहजता प्रदान गरी, अनुगमन, निरीक्षण गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो ।

७.१०.३ कार्य संचालन प्रक्रिया:

- (क) यस कार्यक्रम संचालनका लागि "चुरे क्षेत्रमा विकास निर्माण गर्दा अवलम्बन गर्नुपर्ने कार्यविधि तथा मापदण्ड, २०७७" अनुरूप गरिनेछ ।
- (ख) सम्बन्धित निकायहरूबाट प्रस्तावित आयोजनाको वातावरणीय अध्ययन, नदीजन्य पदार्थको व्यवस्थापन सम्बन्धमा स्थलगत निरीक्षण, अध्ययन, अनुगमन जस्ता कार्यहरू गरिनेछ ।
- (ग) स्थलगत निरीक्षण, अध्ययन, अनुगमन गर्न प्रस्ताव तयार गरी स्वीकृत गरिनेछ ।
- (घ) स्थलगत निरीक्षण, अध्ययन, अनुगमन गरी प्राप्त प्रतिवेदन अनुसार आवश्यक पृष्ठपोषण तथा कार्यवाही गरिनेछ ।
- (ङ) सम्बन्धित निकायहरूबाट गरिएको प्रस्ताव र भएको पृष्ठपोषण तथा कार्यवाही अनुसार कार्यक्रमको प्रगति तय गरिनेछ ।

७.११ विभिन्न विषयका अध्ययन अनुसन्धानका लागि कार्यक्षेत्रगत शर्त (TOR) तयारी

समितिको वार्षिक स्वीकृत कार्यक्रम अन्तर्गत कार्यालयबाट संचालन हुने कार्यक्षेत्रगत शर्त (TOR) तयार गर्नुपर्ने कार्यक्रमहरूको लागि यो कार्यक्रम तय गरिएको हो । यो कार्यक्रम कार्यक्षेत्रगत शर्त (TOR) तयारीको लागि स्वीकृत कार्यक्रम अनुसार समिति कार्यालयका कर्मचारी, कानुनि विज्ञ, आवश्यकता अनुसार विषय विज्ञ वा सेवा प्रदायक छनोट गरी संचालन गरिनेछ ।

परिच्छेद-८

विविध

- ८.१ प्रचलित कानूनको व्यवस्था लागू हुने: यस कार्यविधिमा उल्लेख भएका कुनै प्रावधान प्रचलित ऐन, नियम तथा निर्देशिकाहरूसंग बाझिएमा बाझिएको हदसम्म प्रचलित ऐन, नियम तथा निर्देशिकाहरूमा उल्लेख भएको प्रावधान नै मान्य हुनेछ।
- ८.२ कार्यविधिको व्याख्या गरी बाधा अड्काउ फुकाउ: यस कार्यविधिको कार्यान्वयनमा कुनै द्विविधा परेमा समितिले कार्यविधिमा रहेको कुनै प्रावधानको व्याख्या गरी त्यस्तो बाधा अड्काउ फुकाउन सक्नेछ।
- ८.३ खारेजी र बचाऊ: “कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि २०७९/८० खारेज गरिएको छ। यो कार्यविधि तयार नहुँदै भए गरेका काम, कारवाही यसै कार्यविधि बमोजिम भएको मानिनेछ।

अनुसूची १

कार्यक्रम कार्यान्वयन सम्झौता

यस राष्ट्रपति चुरे-तराई मधेश संरक्षण विकास समिति कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई, ... को चालु आ.व. .... को स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रम अनुसारको ..... कार्यक्रम (खर्च शीर्षक नं. .. क्रियाकलाप नं. .... ) ..... जिल्लाको ...नगर/गाउँपालिका वडा नं. .... स्थित .... स्थानमा कार्य सञ्चालन गरी सम्पन्न गर्न र स्याहार सम्भार समेत गर्नका लागि प्रचलित ऐन नियमको परिधिभित्र रही नेपाल सरकार, राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समिति, कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई ... (यसपछि प्रथम पक्ष भनिएको) र श्री ... (यसपछि दोस्रो पक्ष भनिएको) बिच तल उल्लेखित विवरण र शर्तहरू मान्य हुने गरी यो सम्झौता सम्पन्न भयो ।

१. कार्यक्रमको नाम, परिमाण:-
२. कार्यक्रम संचालन गर्ने समिति गठन मिति:
३. कार्यक्रम लागु हुने क्षेत्र:
  - (क) गाउँ/नगर पालिका:
  - (ख) वडा नं.
  - (ग) क्षेत्र/गाउँ/टोल:
४. कार्यक्रमबाट लाभान्वित
  - (क) गाउँ/नगरपालिका:
  - (ख) वडा नं.
  - (ग) क्षेत्र / गाउँ / टोल:
  - (घ) घरधुरी संख्या: ..... घर (जनजाति ... दलित .... अन्य ...)
५. काम शुरु गर्ने मिति:

काम सम्पन्न गर्नु पर्ने मिति:
६. कार्यक्रमको लागि अनुमानित खर्च (कन्टिन्जेन्सी बाहेक )
  - (क) कार्यालयको तर्पबाट व्यहोर्ने:
  - (ख) जनसहभागिताबाट व्यहोर्ने:
  - (ग) अन्य निकायले व्यहोर्ने:
  - (घ) कुल जम्मा:
७. कामको परिमाण, आवश्यक सामग्री, ज्यामीको विवरण र खर्च व्यहोर्ने श्रोत स्वीकृत लागत इस्टिमेटमा उल्लेख गरे अनुसार हुनेछ ।
८. कामको गुणस्तर र डिजाइन संलग्न स्वीकृत लागत इस्टिमेट, नक्सा र स्पेसिफिकेशनमा उल्लेख गरे बमोजिम हुनुपर्ने छ ।
९. निर्माण कार्य शुरु गर्ने बखत निर्माण सामग्री अग्रिम रूपमा उपलब्ध हुनु पर्ने छ । निर्माण सामग्री दोश्रो पक्षले खरिद गरी कार्यालयमा बिल पेश गर्नु पर्नेछ । दोश्रो पक्षको निवेदन, र स्थानीय पालिका तथा प्रथम पक्षको प्राविधिकको निरीक्षण प्रतिवेदनको आधारमा सम्पन्न निर्माण कार्यको रकम भुक्तानी गरिनेछ


राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

- । कार्यालयले व्यहोर्ने रकमको हकमा प्राविधिक प्रतिवेदन बमोजिम सम्पन्न प्रगतिको आधारमा किस्ता किस्ता गरेर रकम उपलब्ध गराइने छ ।
१०. सार्वजनिक खरिद नियमावली, २०६४ को नियम ९७ को उपनियम (५) बमोजिम सम्झौता भएको कार्यालयले व्यहोर्ने रकमको एकतिहाइसम्म अग्रिम पेशकी दोस्रो पक्षलाई उपलब्ध गराउन सकिने छ । तर त्यसका लागि दोस्रो पक्षको निवेदन र यस इकाइको प्राविधिक तथा योजना शाखाको राय सफारिस आवश्यक हुने छ ।
११. प्रयोग गर्ने निर्माण सामग्रीहरू नेपाल गुणस्तर चिन्ह प्राप्त र लागत अनुमानको स्पेसिफिकेसन बमोजिमको हुनु पर्ने छ । बाह्य निर्माण सामग्रीहरू (जस्तै: जि.आइ. बक्स, तार आदि ) को खरिद बिलसँगै बिल विजक नं. उल्लेख भएको ल्याब परीक्षणको प्रमाण पत्र दोस्रो पक्षले अनिवार्य संलग्न राख्नु पर्ने छ । अन्यथा पहिलो पक्ष भुक्तानी दिन बाध्य हुने छैन ।
१२. काम सम्पन्न भई सकेपछि सरोकारवालाहरूको सहभागितामा सार्वजनिक सुनुवाई गराई प्रतिवेदन पेश भए पश्चात मात्र अन्तिम किस्ताको रकम भुक्तानी दिइनेछ । सकेसम्म प्रथम पक्षको कर्मचारीको रोहवरमा सार्वजनिक सुनुवाई गराई प्रतिवेदन पेश गरेपछि नेपाल सरकारको प्रचलित नियम कानून बमोजिम लाग्ने कर कट्टी गरी मात्र अन्तिम किस्ता वापतको रकम दोस्रो पक्षलाई भुक्तानी गरिनेछ ।
१३. निर्माण कार्यको लागि आवश्यक पर्ने निर्माण औजार र ज्यावलहरू दोस्रो पक्षले स्थानीय रूपमा व्यवस्था गरी काम सम्पन्न गर्नु पर्नेछ । सम्झौताको समयावधि भित्र दोस्रो पक्षले काम सम्पन्न गर्नु पर्नेछ ।
१४. योजना सम्पन्न भएपश्चात यो योजना लाई स्वतः हस्तान्तरण भएको मानिनेछ । स्थानीय साधन जुटाउने, व्यवस्थित ढंगले काम सम्पन्न गर्ने, योजनाको स्याहार संभार र मर्मत समेत गरी प्राप्त लाभ विवादरहित ढंगले बाँडफाड गर्ने दायित्व सोही समितिको हुनेछ ।
१५. कार्यक्रमको लागि खरिद गरिएको निर्माण सामग्री कुनै पनि अन्यत्र प्रयोग गर्नु हुदैन । कथंकदाचित त्यस्तो पर्ने भएको पाइएमा त्यसरी प्रयोग भएको सामग्रीको मूल्य बराबरको रकम दोस्रो पक्षले भुक्तानी पाउनु रकमबाट कार्यालयले कट्टा गर्न सक्नेछ । दुरुपयोग भएको निर्माण सामग्रीको मूल्य उपभोक्ता समूहले पाउनु पर्ने रकम भन्दा बढी भई असुल हुन नसक्ने स्थितिमा कार्यालयले प्रचलित ऐन कानून बमोजिम असुल गर्नेछ ।
१६. सम्बन्धित प्राविधिकको सहमति विना दोस्रो पक्षले डिजाईन फेर्न पाउने छैन । उपभोक्ता समितिले आफु खुसि डिजाईन फेरी काम गरेमा त्यसको भुक्तानी गर्न कार्यालय बाध्य हुने छैन ।
१७. योजना सम्झौता भइ कार्यदिश पाएको मितिबाट ७ (सात) दिन भित्र काम शुरु गर्नु पर्नेछ । काम शुरु नगरेको खण्डमा कार्यालयको तजविज अनुसार कार्यक्रम स्थगित गर्न सकिनेछ । त्यस्तो स्थानमा पुनः कार्यक्रम संचालन गर्न कार्यालय बाध्य हुने छैन ।
१८. दोस्रो पक्षले गर्नु पर्ने काम कुनै ठेकेदारबाट गराउन पाइने छैन । त्यस्तो गरेको खण्डमा कार्यालयले सम्झौता रद्द गर्न सक्नेछ ।
१९. काम गर्ने कामदार सम्बन्धित उपभोक्ता समूह भित्रको हुनु पर्नेछ तर प्रत्यक्ष लाभान्वित हुने समुदायभित्र सम्बन्धित काम गर्न सक्ने श्रमिक (दक्ष र अदक्ष ) प्राप्त हुन नसकेमा अन्य समूह वा व्यक्ति विशेषलाई काममा लगाउन सकिनेछ, त्यसको जानकारी प्रथम पक्षलाई समयमै गराउनु पर्नेछ ।









राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

२०. सार्वजनिक खरिद नियमावली, २०६४ को बाह्रौं संशोधन, २०७९ ले नियम ११२ को उपनियम (३क) मा व्यवस्था गरे बमोजिम दोश्रो पक्षले यस सम्झौता अनुसार हुने निर्माण कार्य तथा संरचनाको बीमा गरउनु पर्नेछ। दोश्रो पक्षले रनिङ विल पेश गर्दा या अन्तिम भुक्तानी माग गर्दा बीमा गरेको कागज-पत्र अनिवार्य पेश गर्नु पर्नेछ। अन्यथा प्रथम पक्ष भुक्तानी दिन बाध्य हुने छैन ।
२१. सम्झौता बमोजिमका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्दा प्रचलित ऐन, नियम, कानून र कार्यविधिहरूले तोकेका व्यवस्था तथा प्रकृयाहरू अवलम्बन गर्नु पर्ने छ ।
२२. कार्यक्रम संचालनको क्रममा दुवै पक्ष बीच विवाद वा अन्योलता सिर्जना भएमा दुवै पक्षको आपसी समझदारीमा छलफल गरी टुंगो लगाईने छ र टुंगो लाग्न नसके प्रचलित ऐन नियम बमोजिम हुनेछ ।

उपभोक्ता समितिको तर्फबाट (अध्यक्ष वा निजले तोकेको व्यक्ति)

नाम :-

पद :-

दस्तखत:-

मिति :-

समितिको छाप :

साक्षीहरू

१. नाम :-

पद :-

दस्तखत:-

मिति :-

२. नाम :-

पद :-

दस्तखत:-

मिति :-

नाम :

पद :-

दस्तखत:-

मिति :-

कार्यालयको तर्फबाट (प्रमुख वा निजले तोकेको व्यक्ति)

नाम :-

पद :-

दस्तखत:-

मिति :-

कार्यालयको छाप :

योजना फाँट

नाम :-

पद :-

दस्तखत:-

मिति :-

संस्था वा निकायको छाप :

साईट इन्चार्ज

नाम :-

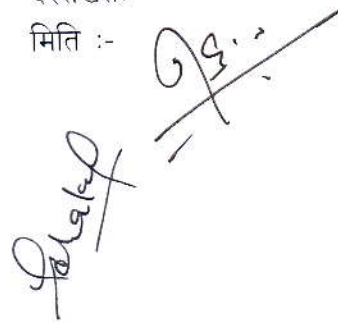
पद :-

दस्तखत:-

मिति :-







अनुसूची - २

होर्डिंग बोर्डको नमुना

क. उपभोक्ता समिति मार्फत कार्य संचालन हुने हकमा

नेपाल सरकार  
राष्ट्रपति चुरे तराई-मधेश संरक्षण विकास समिति  
कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई

.....

१. कार्यक्रम :
२. आ.व. :
३. स्थान :
४. उपभोक्ता समितिको नाम :
५. सम्झौता मिति :
६. कार्य सम्पन्न गर्नु पर्ने मिति :
७. अनुमानित लागत विवरण
  - क) कार्यालयले व्यहोर्ने :
  - ख) उपभोक्ता समुहले व्यहोर्ने :
  - ग) अन्यले व्यहोर्ने :कुल अनुमानित लागत :
८. सम्पन्न हुने मुख्य संरचना तथा कार्यक्रमहरू
  - क.
  - ख.
  - ग.

“चुरेको माटो चुरेलाई, सफा पानी सवैलाई”





ख. ठेक्का पट्टा मार्फत कार्य संचालन हुने हकमा

नेपाल सरकार  
राष्ट्रपति चुरे तराई-मधेश संरक्षण विकास समिति  
कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई

.....

१. कार्यक्रम :
२. अ.व. :
३. स्थान :
४. ठेक्का पट्टा नं.:
५. ठेकेदारको नाम :
६. सम्झौता मिति :
७. कार्य सम्पन्न गर्नु पर्ने मिति :
८. कबोल अंक :
९. गरिने मुख्य कार्यहरू
  - क.
  - ख.
  - ग.

“चुरेको माटो चुरेलाई, सफा पानी सवैलाई”

अनुसूची - ३

उपभोक्ता समिति गठन तथा संचालन सम्बन्धी व्यवस्था

योजना निर्माण सम्पन्न गर्न गठन गरिने उपभोक्ता समिति तथा उपसमितिहरू देहाय बमोजिम हुनुपर्नेछ।  
उपभोक्ता समिति - यस समितिमा कम्तीमा ७ देखि बढीमा ९ सदस्य रहने एक सहभागिमुलक समावेशी  
उपभोक्ता समिति गठन गरिने छ जसमा कम्तीमा ३३ % महिलाको प्रतिनिधित्व हुनु पर्नेछ।

अध्यक्ष :-

उपाध्यक्ष:-

सचिव :-

कोषाध्यक्ष:-

सदस्य :- ३ देखि ५ जना

(७ सदस्यीय समिति भए ३ जना र ९ सदस्यीय समिति भए ५ जना सदस्य रहने छन् मुख्य पदमा  
कम्तीमा एक जना महिला हुने गरी समिति गठन गर्नु पर्नेछ)।

उपभोक्ता समितिको जिम्मेवारी

योजना कार्यान्वयनको लागि गठन गरिएको उपभोक्ता समितिको काम, कर्तव्य र भूमिका महत्वपूर्ण हुन्छ।  
त्यसैले उपभोक्ता समितिले कार्यान्वयन निकाय र उपभोक्ता समिति बीचमा भएको सहकार्य पत्रमा उल्लेखित  
शर्त र सीमाका अधिनमा रही कार्य गर्नु पर्नेछ । उपभोक्ता समितिको जिम्मेवारी देहाय बमोजिम हुनेछ।

- (क) योजना निर्माणका लागि उपभोक्ता समिति मातहतमा गठन गरिएका उप-समितिहरू बीचमा  
समन्वयकारी भूमिका निर्वाह गर्ने।
- (ख) योजनाको डिजाईन, ईस्टिमेट र प्राविधिकले दिएको निर्देशनको आधारमा तयार गरिएको कार्य  
योजना अनुसार निर्माण कार्य समयावधि भित्रै सम्पन्न गरिसक्ने।
- (ग) सम्बन्धित वडाका कर्मचारी सहितको उपस्थितमा मूल समिति र उप समितिको संयुक्त मासिक  
बैठक बसी प्रगति समीक्षा र आगामी कार्य योजना वारेमा छलफल गर्नुका साथै सो बैठकमा  
प्राप्त भएका गुनासाहरूको सम्बोधन गर्ने। बैठकको निर्णय सर्वसाधारणको जानकारीका लागि  
वडा कार्यलयको सूचना पाटीमा टाँस गरी सार्वजनिक गर्नु पर्नेछ ।
- (घ) योजनाको निर्माण काम शुरु गर्नु भन्दा पहिला उपभोक्ता समितिले योजनाको अनुमानित लागत  
विवरण पेटिका राख्नु पर्नेछ सहितको बोर्ड योजना स्थलमा टाँस गर्नु पर्नेछ र सबैको पहुँच हुने  
गरी गुनासो/सुझाव र उक्त सुझाव पेटिका मासिक बैठकको दिन सबैको उपस्थितिमा खोल्नु  
पर्नेछ । (ङ) योजना निर्माणको कामको वारेमा नागरिकहरूको कुनै प्रकारको गुनासो आएमा  
यसै बैठक मार्फत गुनासोहरूको सम्बोधन गरिने छ ।
- (च) मूलसमितिले कुनै पनि निर्णय गर्दा कामको बाँडफाँडको लागि निर्माण गरिएका उपसमितिहरूको  
बैठकबाट सिफारिस गरिएका कुराहरू आधारमा निर्णय गर्नुपर्नेछ।

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

- (छ) कुनै पनि सामग्री खरिद गर्दा कामदारको छनौट र दर रेट निर्धारण गर्दा सामग्री ढुवानीको दर रेट निर्धारण गर्दा खरिद उपसमिति बाट सिफारिस भइ आए बमोजिमको कुरालाई निर्माण समितिको बैठक बसी अन्तिम निर्णय गर्नुपर्ने छ ।
- (ज) योजना सम्बन्धी सम्पूर्ण खाता, बिल, भपाई र अन्य सामग्रीको चुस्त दुरुस्तकासाथ दैनिक अभिलेख राख्ने र सम्बन्धित कसैले हेर्न चाहेमा सम्पूर्ण कुराहरू देखाउनु पर्नेछ ।
- (झ) योजनामा आवश्यक बाह्य र स्थानीय निर्माण सामग्रीको उपयुक्त तरिकाले उचित भण्डारण तथा व्यवस्थापन गर्ने र उक्त कुराको दैनिक रेकर्ड राख्नु पर्नेछ ।
- (ञ) योजनाको पारदर्शिताको लागि योजनामा अवलम्बन गरिएका सम्पूर्ण विधिको प्रयोग गर्ने र योजनाको रकम संस्थाबाट निकास भई कामदारले प्राप्त गरि सकेको अवस्थामा योजनाको सार्वजनिक लेखा परीक्षण गराई खर्चको विवरण सार्वजनिक स्थलमा टाँस गर्नु पर्नेछ ।
- (ट) योजनामा छुट्टाएको रकम सोही शीर्षकमा मात्र खर्च गर्नु पर्दछ र उपभोक्ता समितिका सदस्यहरूले उक्त रकम आफ्नो व्यक्तिगत प्रयोजनमा खर्च गर्न पाउने छैन । यदि व्यक्तिगत रूपमा खर्च गरेमा खर्च असुल उपर गर्नु पर्नेछ ।
- (ठ) जालसाझी र ठगी जस्ता कार्यहरूमा शुन्य सहनशीलताको नीति अपनाउनु पर्नेछ ।
- (ड) योजना निर्माणको काम गर्दा स्थानीय प्राकृतिक वातावरणमा हानी नोक्सानी नपुग्ने गरी वातावरण मैत्री क्रियाकलापहरू अवलम्बन गरी कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्नेछ ।
- (ढ) मूल उपभोक्ता समितिको मातहतमा रहने गरी उप-समितिहरू गठन गर्न सकिनेछ ।
- (ण) उपसमितिहरू निर्माण गर्दा उपभोक्ता समितिबाट एक जनालाई उपसमितिको अध्यक्ष चयन गरी कम्तिमा ३ जनाको उपसमिति गठन गर्नु पर्ने छ । उपभोक्ता समितिले उपसमितिमा तीनजना मध्ये एकजना महिला सदस्य अनिवार्य छनौट गर्नुपर्ने छ तर अनुगमन उपसमितिका सम्पूर्ण सदस्यहरू उपभोक्ता समिति भन्दा बाहिरका हुनु पर्नेछ ।
१. खरिद उप-समिति - खरिद उप-समिति ३ सदस्यीय निम्न अनुसारको हुनेछ ।  
संयोजक :- १ (मूल समितिको जिम्मेवार पदाधिकारी मध्येबाट छनौट गर्ने )  
सदस्य - २ जना  
जिम्मेवारीहरू:-
- (क) खरिद उपसमितिले मूल समितिले तोकेका कार्य गर्नु गराउनु पर्दछ ।
- (ख) स्थानीय निर्माण सामग्रीहरू जस्तै ढुङ्गा, बालुवा, गिट्टी, काठ, ईटा, बाँस, डोरी जस्ता सामग्रीहरू तथा समुदायको भागमा परेको (अनुमानित लागत विवरणमा समुदायको सहयोग रहेका) अन्य गैर स्थानीय सामग्री खरिद प्रक्रिया अनुसार खरिद गर्ने कार्य गर्नु पर्नेछ ।
- (ग) सामग्री खरिद गर्नु पूर्व के के सामग्री खरिद गर्ने हो त्यो मूल समितिबाट स्वीकृत लिई खरिद उपसमितिको बैठक बसाई कोटेसन आव्हान गर्नु पर्नेछ वा स्थानीय स्तरमा मूल्य बुझी सबै भन्दा कम मूल्यमा खरिद गर्ने प्रयोजनका लागि मूल समितिमा सम्पूर्ण कागजातहरू पेश गर्नु पर्नेछ ।

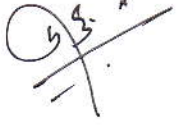
२. अनुगमन तथा मुल्यांकन उप-समिति - अनुगमन तथा मूल्याङ्कन उप-समिति ३ सदस्यीय निम्न अनुसारको हुनेछ ।

संयोजक :- १ जना ( वडाका समाजसेवी तथा जानिफकारहरू मध्येबाट १ जना संयोजक र २ जना सदस्यहरू छान्ने)

सदस्य :- २ जना

जिम्मेवारीहरू:-

- (क) उपभोक्ता समितिको कार्य योजना अनुसारको र संस्थाले दिएको डिजाइन इस्टिमेट अनुसारको कार्य सञ्चालन भइरहेको छ वा छैन त्यसको निरन्तर अनुगमन गरी उपभोक्ता समिति र सहयोगी संस्थालाई रचनात्मक सुझावहरू दिनु पर्नेछ ।
- (ख) निर्माण सम्बन्धी कामको अनुगमन गर्दा हरेक दिन निर्माणस्थलमा गई काम भए नभएको अनुगमन गर्नु पर्नेछ ।
- (ग) निर्माण सामग्रीहरूको प्रयोग र कामदारहरूको परिचालन सही तरिकाबाट भएको छ वा छैन र भए गरेको काम सही छ वा छैन भन्ने कुरा निर्माण स्थलमा गई जाँचबुझ गर्नु पर्नेछ ।
- (घ) जुन उद्देश्य राखेर कार्य सञ्चालन गरेको हो सोअनुरूप काम भइरहेको छ वा छैन भन्ने विषयमा प्रत्यक्ष अनुगमन गरी सल्लाह-सुझाव दिनु पर्नेछ ।



अनुसूची - ४

सार्वजनिक सुनुवाई फारम  
(सार्वजनिक सुनुवाईको प्रतिवेदन)

आज मिति..... गते ..... वारका दिन श्री ..... उपभोक्ता  
समिति/समूहका अध्यक्ष ..... को अध्यक्षतामा ..... जिल्ला .....  
पालिका, वडा नं. .... अन्तर्गत तपसिल वमोजिमको उपस्थितिमा बैठक बसी .....  
जिल्ला ..... पालिका, वडा नं. .... को ..... नदीप्रणालीमा पर्ने ..... मा राष्ट्रपति चुरे-  
तराई मधेश संरक्षण विकास समिति, कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई, ..... र  
श्री ..... उपभोक्ता समिति/समूहको सम्पन्न कार्यक्रमको सार्वजनिक सुनुवाईका लागी  
तपसिल अनुसारको निर्णयहरू गरियो ।

उपस्थिति

अध्यक्ष श्री .....

अतिथि श्री .....

उपाध्यक्ष श्री .....

सचिव श्री .....

कोषाध्यक्ष श्री .....

सदस्य श्री .....

सदस्य श्री .....

सदस्य श्री .....

अन्य आमन्त्रित उपभोक्ता/व्यक्तिहरू

श्री .....

श्री .....


श्री .....

प्रस्तावहरू

१. कार्यक्रम सम्पन्न सम्बन्धमा ।

२. सार्वजनिक लेखा परिक्षण सम्बन्धमा ।



  
५५  
२०८२/०२/०३







३. भुक्तानी सम्बन्धमा ।
४. जिम्मेवारी तोकिने संबन्धमा ।

निर्णयहरू

१. प्रस्ताव नं. १ माथि छलफल गर्दा ..... उपभोक्ता समिति/समूह र राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समिति, कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई, ..... विच ..... कार्यक्रमको कार्य सम्झौता अनुसार ..... पालिका, वडा नं. .... , ..... कार्यसम्पन्न भएको सर्व सहमतीबाट निर्णय गरियो ।
२. प्रस्ताव नं. २ माथि छलफल गर्दा राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समिति, कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई, ..... संग कार्यक्रमको कार्य सम्झौता अनुसार उक्त कार्य सम्पन्न गर्न तपसिल अनुसारको खर्च (जनसहभागिता सहित) सार्वजनिक लेखा परिक्षण भएको सर्व सहमतीबाट निर्णय गरियो ।

तपसिल

| सि.नं | कार्य विवरण | परिमाण | रा.चु.त.म.स.वि.स.ले | उ.स.ले           | अन्यले     | जम्मा खर्च रु.    | कैफियत |
|-------|-------------|--------|---------------------|------------------|------------|-------------------|--------|
|       |             |        | व्यहोरेको           | जनश्रम दान गरेको | व्योहोरेको | (जनसहभागिता सहित) |        |
|       |             |        |                     |                  |            |                   |        |
|       |             |        |                     |                  |            |                   |        |
|       |             |        |                     |                  |            |                   |        |
|       |             |        |                     |                  |            |                   |        |
|       | जम्मा रु.   |        |                     |                  |            |                   |        |

३. प्रस्ताव नं. ३ माथि छलफल गर्दा राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समिति, कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई, ..... संग कार्य सम्झौता भए अनुसारको सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न भई सार्वजनिक लेखापरिक्षण भए अनुसारको भुक्तानी हुनुपर्ने रकम रु. .... अक्षरुपि रु. .... भुक्तानीका लागी राष्ट्रपति चुरे-तराई मधेश संरक्षण विकास समिति, कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई, ..... पहल गर्न सर्वसहमतीबाट निर्णय गरियो ।
४. प्रस्ताव नं. ४ माथि छलफल गर्दा राष्ट्रपति चुरे तराई मधेश संरक्षण विकास समिति, कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई, ..... बाट प्राप्त हुने रकमको लागी आर्थिक कारोबार गर्न सम्पूर्ण अधिकार उपभोक्ता समूह/समितिका अध्यक्ष श्री ..... र ..... लाई तोकिएको सर्वसहमतीबाट निर्णय गरियो ।

(नोट: यस नमुना फरमेटमा कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाईले मुख्य विषयलाई समेटी आवश्यकता अनुसार थपघट गर्न सक्नेछ।)

राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

अनुसूची - ५

मासिक प्रगति विवरण फाराम

नेपाल सरकार  
राष्ट्रपति चुरे तराई-मधेश संरक्षण विकास समिति  
कार्यक्रम कार्यान्वयन इकाई

पहिलो प्राथमिकता प्राप्त आयोजनाको मासिक प्रगति विवरण

कार्यक्रमको नाम : राष्ट्रपति चुरे तराई-मधेश संरक्षण विकास कार्यक्रम

आ.व.:..... महिना..... मिति.....

| सि.न. | कार्यक्रमको नाम | इकाई | वार्षिक लक्ष्य | यो महिनाको प्रगति | यस महिना मा भएका क्रियाकलापहरू | हाल सम्मको प्रगति | कैफियत |
|-------|-----------------|------|----------------|-------------------|--------------------------------|-------------------|--------|
|       |                 |      |                |                   |                                |                   |        |
|       |                 |      |                |                   |                                |                   |        |
|       |                 |      |                |                   |                                |                   |        |
|       |                 |      |                |                   |                                |                   |        |

तयार गर्ने

चेक गर्ने

प्रमाणित गर्ने

2082/02/2

अनुसूची - ६

त्रैमासिक तथा वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन फारामहरू

पाना नं. १/२

१. आ.व. :-  
 २. बजेट उपशीर्षक नं. :-  
 ३. मन्त्रालय :-  
 ४. कार्यक्रम/आयोजनाको नाम :-  
 ५. आयोजना/कार्यालय प्रमुखको नाम :-  
 ६. यस अवधिको बजेट (रु.) :-  
 (क) आन्तरिक (१) नेपाल सरकार :-  
 (२) संस्था :-  
 (३) जनसहभागिता :-  
 (ख) वैदेशिक (१) ऋण :-  
 (२) अनुदान :-
७. यस अवधिको खर्च रकम र प्रतिशत :-  
 (क) आन्तरिक (१) नेपाल सरकार :-  
 (२) स्थानीय निकाय/संस्था :-  
 (३) जनसहभागिता :-  
 (ख) वैदेशिक (१) ऋण :-  
 (२) अनुदान :-
८. चालू आ.व.को हालसम्मको खर्च रकम र प्रतिशत :-  
 ९. कुल लागतमध्ये शुरूदेख यस अवधिसम्मको कुल खर्च रकम र प्रतिशत :-  
 १०. आयोजनाको शुरूदेख यस अवधिसम्मको भौतिक प्रगति प्रतिशत :-  
 ११. आयोजनाको कुल अवधिमध्ये वित्तको समय प्रतिशतमा :-
१२. शोधभर्ना स्थिति :-  
 (क) माग गर्नु पर्ने रकम :-  
 (ख) माग गरेको रकम :-  
 (ग) प्राप्त हुन बाँकी रकम :-

| क्र.स. | कार्यक्रम / क्रियाकलाप                     | खर्च शीर्षक | इकाई | वार्षिक लक्ष्य |     | त्रैमासिक लक्ष्य |     | त्रैमासिक/वार्षिक प्रगति |       | प्रतिवेदन अवधिसम्मको प्रगति |       |        |       | कैफियत |      |       |
|--------|--|-------------|------|----------------|-----|------------------|-----|--------------------------|-------|-----------------------------|-------|--------|-------|--------|------|-------|
|        |  |             |      | परिमाण         | भार | परिमाण           | भार | परिमाण                   | भारित | खर्च                        | भौतिक | परिमाण | भारित |        | खर्च | भौतिक |
|        |  |             |      |                |     |                  |     |                          |       |                             |       |        |       |        |      |       |
|        | या) पूर्वागमन खर्च अन्तर्गतका कार्यक्रमहरू |             |      |                |     |                  |     |                          |       |                             |       |        |       |        |      |       |
|        | आ) पूर्वागमन खर्च कार्यक्रमको जम्मा        |             |      |                |     |                  |     |                          |       |                             |       |        |       |        |      |       |
|        | आ) चालू खर्च अन्तर्गतका कार्यक्रमहरू       |             |      |                |     |                  |     |                          |       |                             |       |        |       |        |      |       |
|        | ख) चालू खर्च कार्यक्रमको जम्मा             |             |      |                |     |                  |     |                          |       |                             |       |        |       |        |      |       |
|        | कुल जम्मा खर्च                             |             |      |                |     |                  |     |                          |       |                             |       |        |       |        |      |       |

त्रैमासिक प्रगति गणना गर्दा प्रतिवेदन अवधिको भारत प्रगति : हरफ (ग) को महल ११/८५ १००  
 वार्षिक प्रगति गणना गर्दा प्रतिवेदन अवधिको भारत प्रगति : हरफ (ग) को महल ११/५५ १००

द्रष्टव्य :-

१. सालवसाली कार्यक्रमहरूको हकमा महल १४ र १५ भर्नुपर्दैन ।  
 २. वार्षिक लक्ष्य प्रगति प्रस्तुत गर्दा महल ७, ८ र ९ भर्नुपर्दैन ।  
 ३. वार्षिक लक्ष्य प्रगति प्रस्तुत गर्दा सो आ.व.को प्रगति महल १२ र १३ भर्नुपर्दैन ।

वार्षिक तथा त्रैमासिक भारत प्रगति निकाल्ने तरिका

वार्षिक भारत प्रगति = क्रियाकलापको प्रगति परिमाण (महल १०) / क्रियाकलापको लक्ष्य परिमाण (महल ४) \* भार महल ५  
 त्रैमासिक भारत प्रगति = क्रियाकलापको प्रगति परिमाण (महल १०) / क्रियाकलापको लक्ष्य परिमाण (महल ७) \* भार महल ८

*[Signature]*

*[Signature]*  
 २०८२/०४/३

*[Signature]*

*[Signature]*

फा.नं. २/२

आयोजनाको समस्यासम्बन्धी विवरण

| क्र. सं. | आयोजना कार्यान्वयनमा देखिएका मुख्य मुल्य समस्याहरू | समस्या देखापर्नुका कारणहरू | समस्या समाधान गर्न गरिएका प्रयासहरू | मविसस समिति (MDAC) मा प्रस्तुत गर्नुपर्ने देखिएका समस्याहरू | समस्या समाधानको लागि सुझाव |
|----------|--|----------------------------|-------------------------------------|---|----------------------------|
| १        | २  | ३                          | ४                                   | ५   | ६                          |
|          |  |                            |                                     |   |                            |
|          |  |                            |                                     |   |                            |
|          |  |                            |                                     |   |                            |

यो पानाअनुसारको विवरण भरी चौमासिक/वार्षिक अवधिका साथै २/२ महिनामा बस्ने मन्त्रालयस्तरीय विकास समस्या समाधान समिति (MDAC) मा पेश गर्न मन्त्रालयमा पठाउनुपर्नेछ ।

तयार गर्नेको नाम, पद:-  
दस्तखत:-  
मिति :-

आयोजना/कार्यालय प्रमुखको नाम, पद:-  
दस्तखत:-  
मिति :-

प्रमाणित गर्नेको नाम, पद:-  
दस्तखत:-  
मिति :-

राष्ट्रिय अनुगमन तथा मूल्याङ्कन दिग्दर्शन / २०७५



  
२०८२/०५/०२





राष्ट्रिय चुरे संरक्षण आयोजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०८२/८३

अनुसूची - ७

पार्श्वचित्र

|    |   |                      |        |         |        |       |
|----|---|----------------------|--------|---------|--------|-------|
| १  | क्रियाकलापको नाम:                           |                      |        |         |        |       |
| २  | आयोजनाको नाम:                               |                      |        |         |        |       |
| ३  | ठेगाना:                                     | वार्ड:               | स्थान: | आ.व.:   |        |       |
| ४  | नदी प्रणालीकोनाम:                           |                      |        |         |        |       |
| ५  | जि.पि.एस. प्वाइन्ट:                         |                      |        |         |        |       |
| ६  | लागत: क) अनुमानीत:                          |                      |        |         |        |       |
|    | उपभोक्ता समुह:                              | कार्यालय:            | अन्य:  | जम्मा:  |        |       |
|    | ख) वास्तवीक खर्च:                           |                      |        |         |        |       |
|    | उपभोक्ता समुह:                              | कार्यालय:            | अन्य:  | जम्मा:  |        |       |
| ७  | उद्देश्य:                                   |                      |        |         |        |       |
| ८  | प्रयोग गरिएको संरक्षण उपचार/<br>प्रविधिहरु: |                      |        |         |        |       |
| ९  | कार्यान्वयन प्रक्रिया:                      |                      |        |         |        |       |
| १० | लैङ्गिक/सामाजिक अवस्था:                     |                      |        |         |        |       |
| ११ | असर/प्रभाव:                                 |                      |        |         |        |       |
| १२ | लाभान्वीत घरधुरी:                           | जम्मा:               | दलीत:  | जनजाती: | मधेशी: | अन्य: |
| १३ | रोजगारी श्रृजना:                            |                      |        |         |        |       |
| १४ | आईपरेका समस्या:                             |                      |        |         |        |       |
| १५ | मर्मत/दिगोपना:                              |                      |        |         |        |       |
| १६ | सिकाईहरु:                                   |                      |        |         |        |       |
| १७ | अन्य:                                       | उपभोक्ता समुहको नाम: |        |         |        |       |
|    |   | अध्यक्ष:             |        |         |        |       |
|    |   | साईट ईन्चार्ज:       |        |         |        |       |
|    |   | ईकाइ प्रमुख:         |        |         |        |       |

कार्य संचालन पहिलाको फोटो:

कार्य सम्पन्न पछिको फोटो:



